Delhi Postal Regd. No. DL(C)-01/1272/2024-26, R.N.I. No. 72014/1999 Posted at LPC Delhi RMS, Delhi-6 Monday & Tuesday

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स

संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र

terapanthtimes.org

छ काय मारण रो त्याग,
कोई पचखें आंण वेंराग।
अभयदान कह्यो जिणराय,
धर्मदांन में मिलियो आय।।

वैराग्य भाव से कोई छह काय के जीवों को मारने का त्याग-प्रत्याख्यान करता है, वह अभयदान कहा गया है। वह धर्म-दान का अंग है।

– आचार्यश्री भिक्षु

नई दिल्ली • वर्ष 27 • अंक 31 • 04 मई - 10 मई 2026 • प्रत्येक सोमवार • प्रकाशन तिथि : 02-05-2026 • पेज 16 • ₹ 10 रुपये

बाहरी वस्तुएं नहीं, भीतर बैठा 'मोह' है विकारों का असली कारण : आचार्यश्री महाश्रमण

पेज 02

लाखों शत्रुओं पर जीत से बड़ी है 'आत्म-विजय' : आचार्यश्री महाश्रमण

पेज 14

Address Here

प्रमाद और कषाय से मुक्ति ही जीवन का असली जन्मोत्सव : आचार्यश्री महाश्रमण

लाडनूं की धरा पर श्रद्धा का ऐतिहासिक महाकुंभ: आचार्य महाश्रमण जी का 65वां जन्मोत्सव संपन्न

अध्यात्म की पूंजी से ही संभव है जन्म-मरण के चक्र से मुक्ति : आचार्य महाश्रमण

लाडनूं।
25 अप्रैल, 2026

तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशमाधिशास्ता, शांतिदूत आचार्यश्री महाश्रमणजी का 65वां जन्मोत्सव 'तेरापंथ की राजधानी' लाडनूं में अभूतपूर्व गरिमा और उल्लास के साथ मनाया गया। योगक्षेम वर्ष के प्रवास के दौरान आयोजित इस ऐतिहासिक जन्मोत्सव में चतुर्विध धर्मसंघ का ऐसा उत्साह देखने को मिला, मानों पूरी श्रद्धा लाडनूं की गलियों में उतर आई हो।

सुधर्मा सभा में श्रद्धा का ज्वार : प्रातःकालीन मुख्य मंगल प्रवचन कार्यक्रम के लिए जब आचार्य प्रवर 'सुधर्मा सभा' में पधारे, तो वहां मौजूद हजारों श्रद्धालुओं ने जयघोष के साथ अपने आराध्य का स्वागत किया। कार्यक्रम का शुभारंभ आचार्यश्री के ओजस्वी महामंत्रोच्चार के साथ हुआ, जिससे पूरा वातावरण आध्यात्मिक ऊर्जा से भर उठा।

भक्ति गीतों और भावाभिव्यक्तियों से दी वर्धापना : जन्मोत्सव के इस पावन अवसर पर भावनाओं का अनूठा संगम देखने को मिला।

महिला मंडल व समणी वृन्द : तेरापंथ महिला मंडल-लाडनूं और समणी वृन्द ने मधुर गीतों के माध्यम से गुरु चरणों में अपनी आस्था निवेदित की।

साध्वी समाज की भावांजलि : शासन गौरव साध्वी राजीमती जी, शासन गौरव साध्वी श्री कनक श्री जी और साध्वी वर्या संबुद्धयशा जी ने आचार्यश्री के व्यक्तित्व को 'प्रकाशमान, पारदर्शी और प्रबल पुरुषार्थ का पर्याय' बताया।

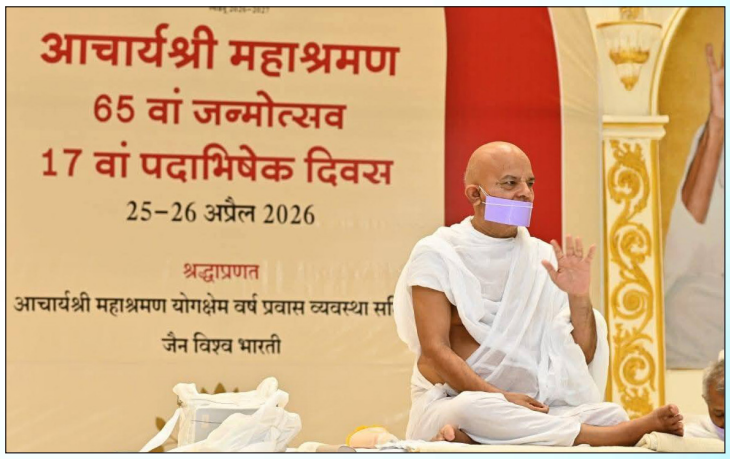

संसार पक्षीय परिवार : आचार्यश्री के सांसारिक परिवार (दूगड़ परिवार) से साध्वी सुमति प्रभा जी, साध्वी चरित्र यशा जी, साध्वी विशाल यशा जी सहित भाई श्रीचन्द दूगड़ और महेन्द्र दूगड़ ने अपनी भावपूर्ण प्रस्तुति दी।

मानव जन्म भाग्य, पर सत्पुरुषार्थ ही सौभाग्य
–आचार्यश्री महाश्रमण

बाल मन की श्रद्धा:

नन्हें बालकों और बालिका आद्या बच्छावत की भावाभिव्यक्ति ने उपस्थित जनसमूह को भाव-विभोर कर दिया।

(शेष पेज 13 पर)

क्रोध, मान, माया और लोभ से बचने का आचार्य प्रवर ने दिया पावन संदेश

क्रोध और अहंकार है पतन के द्वार, इनसे बचें : आचार्यश्री महाश्रमण

साधु-साध्वियों ने दी भावाभिव्यक्ति, दो दिवसीय वर्धापना क्रम का हुआ समापन

लाडनूं।
27 अप्रैल, 2026

जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशमाधिशास्ता, चतुर्विध धर्मसंघ के शास्ता आचार्य श्री महाश्रमण जी ने आज 'कषाय से क्यों बचें' विषय पर मर्मस्पर्शी

प्रतिबोध प्रदान किया। आचार्य प्रवर ने स्पष्ट किया कि आत्मा की संसारी अवस्था को बनाए रखने और कर्मों के गहराने में कषायों की मुख्य भूमिका होती है।

कर्म बंध के लिए उत्तरदायी है सकषायी अवस्था : आचार्य श्री ने तात्त्विक चर्चा करते हुए फरमाया कि कर्मों के आगमन का द्वार ही 'कषाय' है। पूज्य प्रवर ने फरमाया कि केवल योग (प्रवृत्ति) से होने वाला बंध नाम मात्र का होता है, किंतु जब योग के साथ कषाय जुड़ जाते हैं, तो कर्मों का बंध अत्यंत गहरा और लंबी अवधि वाला होता है। पूज्य प्रवर ने क्रोध, मान, माया और लोभ—इन चारों कषायों से बचने की प्रेरणा देते हुए उनके दुष्प्रभावों पर प्रकाश डाला।

आचार्य श्री द्वारा प्रदत्त विजय के सूत्र:

१. क्रोध से अधोगतिः क्रोध जीव को नीचे की ओर ले जाता है।

(शेष पेज 13 पर)

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
हे प्रभो! यह तेरापंथ
04 मई - 10 मई 2026

विवेक ही आत्मा का वास्तविक नेत्र, कषायों का अल्पीकरण ही सच्ची साधना : आचार्यश्री महाश्रमण

जन्मोत्सव व पट्टोत्सव के उपलक्ष्य में उमड़ा वर्धापना का ज्वार | सद्गुरु का मंत्र: अनुशासन में हो वात्सल्य और व्यवहार में विनम्रता

लाडनूं।
28 अप्रैल, 2026

जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशमाधिशास्ता, अखण्ड परिव्राजक, अहिंसा यात्रा प्रणेता, युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी के मंगल महामंत्रोच्चार से कार्यक्रम का भव्य शुभारंभ हुआ। साध्वी वृंद ने 'प्रज्ञा गीत' के संगान से वातावरण को भक्तिमय कर दिया। आचार्य प्रवर के जन्मोत्सव एवं पट्टोत्सव के उपलक्ष्य में वर्धापना का क्रम आज भी उत्साहपूर्वक जारी रहा।

आचार्य श्री की पावन देशना : 'विवेक और कषाय मुक्ति' : महातपस्वी आचार्यश्री महाश्रमण जी ने 'उत्तरज्झयणाणि' आगम के माध्यम से चतुर्विध धर्मसंघ को पावन संबोध प्रदान करते हुए अपने प्रवचन का शुभारंभ किया। आचार्य श्री ने विवेक को धर्म का आधार बताते हुए फरमाया कि विवेक एक अत्यंत महत्त्वपूर्ण तत्त्व है, परन्तु हर व्यक्ति को तत्काल विवेक प्राप्त हो जाए, यह सामान्यतया कठिन होता है। प्रवचन के मुख्य बिंदु इस प्रकार रहेः

अध्यात्म का दृष्टि दानः आचार्य श्री ने फरमाया कि लौकिक जीवन में नेत्रदान का महत्त्व है, किन्तु आध्यात्मिक संदर्भ में किसी को 'सम्यक् दृष्टि' देना, असंयमी को संयमी और अव्रती को व्रती बना देना ही वास्तविक 'दृष्टि दान' और उपकार है।

विवेक की अनिवार्यताः शास्त्रानुसार जागृत विवेक व्यक्ति का एक नेत्र है। जिसके पास न स्वयं का विवेक है और न ही वह विवेकशील पुरुषों की संगति करता है, वह बाहरी नेत्र होने पर भी आध्यात्मिक रूप से अंधा है।

कषायों से पृथकता : विवेक का वास्तविक अर्थ है—कषायों (क्रोध, मान, माया, लोभ) को स्वयं से पृथक करना। यद्यपि इनसे पूर्ण मुक्ति कठिन है, फिर भी इनका अल्पीकरण (कमी) करने का निरंतर प्रयास करना चाहिए।

क्षमा और सौहार्द : समुदाय में रहते हुए यदि कभी मतभेद हो जाएं, तो मन में गांठ नहीं बांधनी चाहिए। यदि रात को कोई बात हुई हो, तो सुबह तक उसे भुलाकर पुनः सामान्य हो जाना चाहिए।

वात्सल्यपूर्ण अनुशासन : बड़ों को

सुधार की दृष्टि से छोटों को कड़ा कहना पड़ सकता है, परन्तु बाद में उन्हें वात्सल्य से संभालना चाहिए ताकि उनका उत्साह और विकास बाधित न हो।

साधुत्व की अखंडता : पूज्य प्रवर ने साधु-साध्वियों को प्रेरणा दी कि प्राप्त संयम जीवन की अंतिम श्वास तक अखंड रहे। अप्रमत्त रहकर आत्मा की रक्षा के साथ-साथ क्षेत्रों में धर्म प्रभावना का प्रयास निरंतर जारी रहे।

श्रद्धाभिव्यक्ति : साधु साध्वी वृंद ने दी भावांजलि : कार्यक्रम में बड़ी संख्या में साधु-संतों ने अपनी अभिव्यक्ति के माध्यम से गुरुदेव के प्रति अटूट श्रद्धा निवेदित की। इनमें प्रमुख रूप से निम्नलिखित नाम सम्मिलित रहेः

मुनि वृंद : मुनि विनोद कुमार जी, मुनि रजनीश कुमार जी, मुनि निकुंज कुमार जी, मुनि आर्ष कुमार जी, मुनि नम्र कुमार जी, मुनि हेम ऋषि जी, मुनि नमन कुमार जी।

साध्वी एवं समणी वृंदः साध्वी सुश्रुत प्रभा जी, साध्वी स्वर्ण रेखा जी, समणी अमल प्रज्ञा जी, साध्वी चरितार्थ प्रभा जी, साध्वी मेघ प्रभा जी, साध्वी काम्य प्रभा जी, समणी विपुल प्रज्ञा जी, साध्वी धन्य प्रभा जी, साध्वी तेजस्वी प्रभा जी, साध्वी अनन्य प्रभा जी, समणी संगीत प्रज्ञा जी, साध्वी अक्षय प्रभा जी, साध्वी प्रीति प्रभा जी, साध्वी अक्षय विभा जी, साध्वी पद्मप्रभा जी, साध्वी मंदार प्रभा जी, साध्वी श्रेष्ठ प्रभा जी, साध्वी माधुर्य प्रभा जी, साध्वी सुधांशु प्रभा जी, साध्वी जगतवत्सला जी, साध्वी चारूलता जी, साध्वी कीर्तिप्रभा जी, साध्वी रक्षित यशा जी, साध्वी युक्ति प्रभा जी, साध्वी प्रसन्न यशा जी, साध्वी आगम प्रभा जी।

> मन में न रखें गांठ, सुबह होने तक मिटा दें हर गिले-शिकवे
> **-आचार्यश्री महाश्रमण**

सामूहिक प्रस्तुति : सरदारशहर साध्वी वृंद एवं सिवांची मालानी साध्वी वृंद ने सामूहिक गीतों के माध्यम से आचार्य श्री को वर्धापित किया।

बाहरी वस्तुएं नहीं, भीतर बैठा 'मोह' है विकारों का असली कारण : आचार्यश्री महाश्रमण

काम और भोग को बताया विष के समान, संयम की साधना पर दिया बल

लाडनूं।
24 अप्रैल, 2026

जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के ग्यारहवें अधिशास्ता, अहिंसा यात्रा प्रणेता युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी ने आज चतुर्विध धर्मसंघ को संबोधित करते हुए इंद्रिय विषयों और आत्म-कल्याण के मार्ग पर गंभीर तात्त्विक प्रकाश डाला। आचार्य प्रवर ने स्पष्ट किया कि पांचों इंद्रियों के विषय केवल 'पुद्गल' हैं और वे स्वयं में इतने शक्तिशाली नहीं कि मन में विकार पैदा कर सकें; असली कारक हमारे भीतर का 'मोहनीय कर्म' है।

इंद्रियों का वर्गीकरण : कामी और भोगी इंद्रियां :

आचार्य श्री ने इंद्रियों को दो श्रेणियों में विभाजित करते हुए फरमाया कि कान और आंख 'कामी इंद्रियां' हैं, क्योंकि

इनका कार्य केवल शब्द और रूप को ग्रहण करना है। वहीं नाक, जीभ और स्पर्श 'भोगी इंद्रियां' हैं, जो गंध, रस और स्पर्श के साथ संलिप्त रहती हैं। पूज्य प्रवर ने फरमाया कि इंद्रिय विषय केवल निमित्त बनते हैं, जबकि उपादान कारण मोहनीय कर्म है, जो राग-द्वेष पैदा करता है।

काम-भोग : चुभन और विष के समान : सांसारिक आकर्षणों पर प्रहार करते हुए आचार्य प्रवर ने फरमाया कि काम और भोग 'शल्य' (कांटा) की तरह हैं जो मन में चुभन पैदा करते हैं। उन्होंने इन्हें 'आशीविष सर्प' (जहरीले सांप) के समान बताया, जिनमें संयम चेतना को नष्ट करने की मारक शक्ति होती है।

आचार्य श्री ने सचेत किया कि यदि कोई प्रत्यक्ष सेवन न भी करे, तो भी काम-भोगों के प्रति केवल 'आसक्ति' रखना ही व्यक्ति को दुर्गति की ओर ले जाता है।

> 75 की उम्र के बाद मौन और स्वाध्याय ही आत्म-कल्याण की कुंजी
> **-आचार्यश्री महाश्रमण**

वृद्धावस्था और साधना का प्रबंधनः

प्रवचन के दौरान आचार्य श्री ने अपने पूर्ववर्ती आचार्यों—आचार्य श्री तुलसी और आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी का पावन स्मरण किया। पूज्य प्रवर ने प्रेरणा देते हुए फरमाया कि 75 वर्ष की आयु के पश्चात व्यक्ति को लंबी यात्राओं और अनावश्यक भाग-दौड़ से बचकर स्वयं को मौन, जप, स्वाध्याय और ध्यान में नियोजित करना चाहिए। अंत समय में निर्मल भावों के साथ साधना को पुष्ट करना ही आत्म-कल्याण का सर्वश्रेष्ठ मार्ग है। कार्यक्रम के दौरान बहिर्विहार से लौटीं साध्वी वर्धमान श्री जी एवं साध्वी राजश्री जी ने गुरुदेव के समक्ष अपनी श्रद्धाभिव्यक्ति दी।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
04 मई - 10 मई 2026

भगवान महावीर के कैवल्य दिवस और आचार्य महाश्रमण के 17वें पट्टोत्सव का अनूठा संगम

ऐतिहासिक पट्टोत्सवः लाडनूं में उमड़ा आस्था का महासागर, हरियाणा को मिला 2028 चातुर्मास का उपहार

लाडनूं।
26 अप्रैल, 2026

बैशाख शुक्ल पक्ष की तिथियां तेरापंथ धर्मसंघ के इतिहास में स्वर्णाक्षरों में दर्ज हो गई हैं। जहां वैशाख शुक्ला नवमी को आचार्य श्री का 65 वां जन्मोत्सव मनाया गया, वही वैशाख शुक्ला दशमी को तेरापंथ के एकादशमाधिशास्ता, युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी का 17वां पट्टोत्सव समारोह जैन विश्व भारती के प्रांगण में अभूतपूर्व हर्षोल्लास के साथ संपन्न हुआ।

साधना और समर्पण का संगमः समारोह का शुभारंभ आचार्य प्रवर के ओजस्वी महामंत्रोच्चार के साथ हुआ। जैन विश्व भारती परिसर अपने अनुशास्ता की अभिवंदना में पूरी तरह निखरा नजर आ रहा था। साध्वी वृंद द्वारा प्रस्तुत 'प्रज्ञा गीत' और संत वृंद की 'आचार्य वंदना' ने वातावरण को आध्यात्मिक ऊर्जा से सराबोर कर दिया। इस अवसर पर शासन गौरव साध्वी कल्पलता जी सहित वरिष्ठ साध्वी व मुनि वृंद ने अपनी भावाभिव्यक्ति देकर गुरु चरणों में श्रद्धा निवेदित की।

'विजनरी और अजातशत्रु' हैं आचार्यवर : साध्वी प्रमुखा श्री विश्रुत विभा जी ने आचार्यश्री का विश्लेषण करते हुए उन्हें 'विजनरी, कोचिंग, डेमोक्रेटिक और एथलेटिक' आचार्य की उपमा दी। वहीं मुख्य मुनिश्री महावीर कुमार जी ने उन्हें 'अजातशत्रु' बताते हुए कहा कि आचार्यश्री पांच महाव्रतों और तीन गुप्तियों की सतत आराधना कर रहे हैं, जिनमें वीतरागता के स्पष्ट दर्शन होते हैं।

महावीर के मार्ग पर तेरापंथ शासनः चतुर्विध धर्म संघ को अमृत देशना प्रदान करते हुए आचार्यश्री महाश्रमण जी ने फरमाया कि आज श्रमण भगवान महावीर का कैवल्य कल्याणक दिवस है। उन्होंने

> तुलसी-महाप्रज्ञ के सपनों के सारथी : आचार्य महाश्रमण के नेतृत्व के 17 सफल वर्ष
> **-आचार्यश्री महाश्रमण**

कहा, 'भगवान महावीर ने साढ़े बारह वर्षों की साधना के बाद आज ही के दिन केवल ज्ञान प्राप्त किया था। यह मेरा सौभाग्य है कि आज का दिन मेरे जीवन के दायित्व से भी जुड़ गया है। मुझे गुरुदेव तुलसी और आचार्य महाप्रज्ञ जैसे दो-दो महापुरुषों की असीम कृपा प्राप्त हुई।' आचार्यश्री ने आगे कहा कि आज पहली बार ऐसा अवसर आया है जब इतनी विशाल संख्या में साधु-साध्वी, समणी और श्रावक समाज इस पट्टोत्सव का साक्षी बना है।

बड़ी घोषणा : 2028 का चातुर्मास हिसार में : कार्यक्रम के दौरान हरियाणा से आए विशाल जनसमूह और विधायक सावित्री जिंदल की भावपूर्ण प्रार्थना को स्वीकार करते हुए आचार्यश्री ने एक बड़ी घोषणा की। आचार्य प्रवर ने वर्ष 2028 का चातुर्मास हिसार (हरियाणा) स्थित कुरुक्षेत्र गौशाला में करने की स्वीकृति प्रदान की। इस घोषणा के होते ही पूरा प्रवचन पांडाल 'गुरुदेव' के जयकारों से गुंजायमान हो उठा।

विशेष आकर्षणः

अद्भुत संयोग : भगवान महावीर का कैवल्य दिवस और आचार्यश्री का पट्टोत्सव एक ही तिथि पर।

गुरु कृपा : आचार्यश्री ने अपने निर्माण में गुरुदेव तुलसी और आचार्य महाप्रज्ञ के योगदान को याद किया।

विशाल उपस्थिति : लाडनूं के इतिहास में पहली बार पट्टोत्सव पर चारित्रात्माओं का इतना बड़ा जमघट।

महातपस्वी धर्मदिवाकर युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी के 65वें जन्मोत्सव, 17वें पट्टोत्सव एवं 53वें दीक्षा दिवस पर सादर अभिवंदना

विनय और वात्सल्य के महासुमेरू हैं- आचार्य महाश्रमण

● **साध्वी अणिमाश्री** ●

अहमदाबाद पश्चिम तेरापंथभवन में स्थानीय तेरापंथ सभा द्वारा आयोजित आचार्य महाश्रमण जी के 65वें जन्मोत्सव एवं 17वें पट्टारोहण दिवस के अवसर पर अपने श्रद्धोद्गार में साध्वी अणिमाश्री जी ने कहा - आचार्य महाश्रमण का जीवन अनेक गुणों का समवाय है। विनय और वात्सल्य भाव की पराकाष्ठा अद्भुत है। इन दो विशिष्ट गुणों ने उनको सरसज्ज बना दिया। चतुर्विध संघ विकास में उनका महनीय, विशाल उदार और प्रम्बल चिन्तन अनुप्रेय है। परम सौभागी महामना व्यक्तित्व ने आचार्य तुलसी और महाप्रज्ञ जी का साक्षात् सान्निध्य प्राप्त किया। जिनशासन और धर्मसंघ की सेवा मात्र नहीं, मानव जाति की सेवा भी उनके जीवन का परम ध्येय है। उनमें आज्ञा निष्ठा, संघ निष्ठा, अनुशासन निष्ठा और आत्म निष्ठा की साधना बेजोड़ है। आज आवश्यकता है घर, परिवार, समाज के सदस्यों के दिलों में इन गुणों का अवतरण हो, जिससे शांति की ,सौहार्द और प्रेम की लौ जलती रहे। छोटी-छोटी खामियों को फ़ैलाने के बजाय नज़रअंदाज़ करते चलें। प्रमोदभावना की सुवास से खुद को भावित करने का पवित्र संकल्प ग्रहण करें और आचार्य महाश्रमण के जैसे सहस्त्र गुणधारी व्यक्तित्व के सच्चे अनुगामी बनें। प्रोफेसर डॉ साध्वी मंगल प्रज्ञा जी ने कहा — अतीत की विशिष्ट पुण्याई ने मोहन को आचार्य महाश्रमण बना दिया। ऐसे पुण्य के पुरोधा इतिहास बनाते नहीं, इनके कर्तृत्व से स्वयं इतिहास बन जाता है। वैशाख का अक्षय महीना उनके जन्म, दीक्षा और पदारोहण के साथ जुड़ा, यह भी प्रबल पुण्याई का द्योतक है। आचार्य तुलसी और आचार्य महाप्रज्ञ का अतिशायी विश्वास को प्राप्त कर पायदान पर चढ़ते रहे और आज जिनशासन के ख्यातनाम आचार्य के रूप में प्रसिद्धि हासिल कर ली। हर दिल में बस गए। विशिष्ट प्रेरणा प्रदायक अवसर पर पारस्परिक विश्वास, संवर्धक प्रयोग का संकल्प स्वीकार करने की साध्वी जी ने प्रेरणा प्रदान की। अपने अनुभवों की साझा करते हुए साध्वी मंगलप्रज्ञा जी ने कहा — मुझे वर्षों तक आचार्यवर की नेकट्य उपासना, शिक्षा ग्रहण आदि का योग मिला, यह मेरा परम सौभाग्य है।

तेरापंथ महिला मंडल पश्चिम ने श्रद्धासिक्त समूह संगान किया। अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के निवर्तमान अध्यक्ष एवं जयपुर तेरापंथ सभा के वर्तमान उपाध्यक्ष सुरेन्द्र सेठिया ने आराध्य की अभ्यार्थना की। महिला मंडल अध्यक्षा सुशीला खतंग व श्रावक लुणकरण सांड, राजेन्द्र बोथरा ने हृदयोद्गार प्रस्तुत किए। साध्वी समत्वयशा जी ने सौम्य मधुर संगान प्रस्तुत किया। साध्वी कर्णिका जी, साध्वी सुदर्शना प्रभाजी ने गुरु गुणोत्कीर्तन में अपूर्व विचारों की अभिव्यक्ति दी। एवं साध्वी मैत्री प्रभा जी ने कार्यक्रम का कुशलतापूर्वक संचालन किया। संघ संगान के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

विनम्रता एवं सहजता के प्रतिमान हैं आचार्य महाश्रमण

● **शासनश्री मुनि विमल कुमार, मुनि उदित कुमार** ●

आचार्य श्री महाश्रमण के जन्मोत्सव, पट्टोत्सव एवं दीक्षा दिवस के उपलक्ष्य में भव्य आयोजन तेरापंथ भवन परिसर के महाप्रज्ञ सभागार में किया गया। शासनश्री मुनि विमल कुमार जी एवं बहुश्रुत मुनि उदित कुमार जी के सान्निध्य में आचार्य महाश्रमण अभिवंदना समारोह अध्यात्म साधना केंद्र परिसर के महाप्रज्ञ सभागार में 26 अप्रैल को आयोजित हुआ। मुनि उदित कुमार जी ने अपने उद्बोधन में कहा— आचार्य महाश्रमण जी का व्यक्तित्व अगाध विनम्रता और अद्भुत सहजता का वह धरातल है, जहाँ अहंकार का पूर्ण विसर्जन हो जाता है। एक महान आचार्य के रूप में उनकी सौम्यता यह सिद्ध करती है कि शिखर पर पहुँचकर भी जड़ों से जुड़े रहना ही वास्तविक महानता है। उनका सहज स्वरूप और वात्सल्यमयी दृष्टि प्रत्येक जिज्ञासु के अंतर्मन को शीतलता प्रदान करती है। वे केवल पथ-प्रदर्शक नहीं, अपितु मानवीय संवेदनाओं और सरल जीवन पद्धति के जीवंत प्रतिमान हैं। शासनश्री मुनि विमल कुमार जी ने अपने संक्षिप्त विचारों में कहा कि आचार्य महाश्रमण जी का जीवन अनुशासन, संयम और करुणा का अनुपम समन्वय है। उनका मार्गदर्शन व्यक्ति को आत्मविकास की दिशा में प्रेरित करता है और समाज में नैतिक मूल्यों के सुदृढ़ीकरण का आधार बनता है। मुनि मधुर कुमार जी, मुनि अक्षय कुमार जी, मुनि धन्य कुमार जी ने भी अपने प्रासंगिक विचार रखें। कार्यक्रम का प्रारंभ दक्षिण दिल्ली महिला मंडल के मंगलाचरण (संगान) से हुआ। पूर्वी दिल्ली महिला मंडल ने भी भक्तिमय गीत की प्रस्तुति दी। इस अवसर पर आचार्य महाश्रमण प्रवास व्यवस्था समिति के अध्यक्ष कन्हैया लाल पटावरी, तेरापंथ सभा दिल्ली के अध्यक्ष सुखराज सेठिया, दक्षिण दिल्ली सभा के अध्यक्ष सुशील पटावरी, दक्षिण दिल्ली महिला मंडल से सरोज भूतोडिया एवं अणुव्रत समिति दिल्ली से बाबूलाल गोलछा, कल्पना ने वक्तव्य व कविता के माध्यम से अपनी भावाभिव्यक्ति दी। आभार ज्ञापन तेरापंथ भवन व्यवस्थापक संदीप डूंगरवाल व संचालन सभा के महामंत्री प्रमोद घोड़ावत ने किया।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
हे प्रभो! यह तेरापंथ
04 मई - 10 मई 2026

महातपस्वी धर्मदिवाकर युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी के 65वें जन्मोत्सव, 17वें पट्टोत्सव एवं 53वें दीक्षा दिवस पर सादर अभिवंदना

संयम और तप के अद्वितीय सूर्य : आचार्य श्री महाश्रमण

● साध्वी अमितरेखा ●

अध्यात्म के सुमेरु आचार्यवर तीर्थंकर के प्रतिनिधि के रूप में जैन शासन के साथ मानव जाति का पथ-दर्शन करवा रहे हैं। तेरापंथ धर्मशासन के आचार्य अतिशय संपन्न व्यक्तित्व के धनी होते हैं। अनुशासन, समर्पण और अप्रमत्तता से निरंतर प्रवर्धमान होते हुए संघ को शिखरों पर चढ़ा रहे हैं। भैक्षवगण एकादशम अधिशास्ता आचार्य श्री महाश्रमणजी की साधना अनुत्तर है। संयम और तप के अद्वितीय सौंदर्य से आपका रूप नव सुषमा को बिखेरता हुआ निखरता जा रहा है। चेहरे की मधुर मुस्कान और आँखों में वात्सल्य रस, निर्झर की तरह अमृत रस वर्षा रहा है। ब्रह्मचर्य के स्वाभाविक तेज से आपका भव्य ललाट बाल सूर्य की तरह चमक रहा है। समुद्र के समान गंभीरता, मेरु के समान अडोलता, सूर्य के समान तेजस्विता, चंद्रमा के समान शीतलता और पृथ्वी के समान सहनशीलता आदि गुणों से आपका जीवन विशिष्ट है। ओजस्विनी वाणी और मधुर स्वर लहरी के साथ सारगर्भित प्रवचन जन-जन को चुम्बक की तरह आकृष्ट कर रहे हैं। महातपस्वी गुरुदेव के जीवन में अनगिन सद्गुण समाहित होकर तीर्थंकर के अतिशय का सबूत दे रहे हैं। शास्त्रों में आचार्य की आठ संपदा बतलाई गई है, और ये आठों संपदाएं आपके जीवन में उत्तरोत्तर वृद्धिंगत हो रही हैं। अनुयोग द्वार के 13वें प्रकरण में बताया गया है–

जह दीवा हीवसय, पप्पए सोय दिप्पए ही वो।
दीप समा आयरिया, हिप्पनि परं च दीवेंति॥

आचार्य को दीपक की उपमा दी गई है। जिस प्रकार एक दीपक से सहस्रों दीपक जल उठते हैं, वैसे ही आचार्य ज्ञान संपन्न होते हुए अपने शिष्यों को निरंतर आगे बढ़ने की प्रेरणा देते हैं। महाप्रभावक, महायशस्वी आचार्य श्री महाश्रमणजी का व्यक्तित्व इतना प्रभावशाली है कि उनके मधुर प्रेरक प्रसंगों की थाह पाना कठिन है।

एक प्रेरक संस्मरण :

वि. सं. 2056 (सन् 2000), तारानगर मर्यादा महोत्सव का प्रसंग था। श्रद्धास्पद महायोगी आचार्य श्री महाप्रज्ञजी की सुखद सन्निधि प्राप्त थी। प्रातः सूर्योदय के साथ ही हम साध्वियां, साध्वी प्रमुखा श्रीजी के साथ गुरु सन्निधि में पहुंचती थीं। एक दिन हम कुछ साध्वियां विलंब से पहुंचीं, तब तक आचार्यवर कक्ष में पधार चुके थे और साध्वी प्रमुखा श्रीजी भी अपने गंतव्य की ओर जा चुकी थीं। मेरे भीतर बेचैनी थी कि अब पूज्यप्रवर के दर्शन कैसे होंगे। हमने बाहर से आचार्यवर को वंदना की और फिर युवाचार्य प्रवर (वर्तमान आचार्य महाश्रमणजी) के कक्ष में गईं। वहाँ हम चार साध्वियां थीं: साध्वी श्री वर्धमानश्रीजी, अमितरेखा, राजश्रीजी और संवरयशाजी।

युवाचार्यवर ने हमसे प्रश्न किया— 'तीर्थंकरों का रंग कौन सा है?' मुझे छोड़कर सभी एक-दूसरे को देखने लगीं। किसी को उत्तर देते न देख मैंने निवेदन किया— 'भन्ते! दो सफेद, दो लाल (लाख), दो हरे, दो काले और शेष सोलह तीर्थंकरों का रंग पीला है'। युवाचार्यवर ने हमें बोध देते हुए नाम-माला की यह गाथा अर्थ सहित मुखस्थ करवाई–

रक्तौ च पद्मप्रभवासुपूज्यौ, शुक्लौ तु चन्द्रप्रभपुष्पदन्तौ।
कृष्णा पुनर्नेमिमुनी विनीलौ श्री मल्लिपार्श्वौ कनकत्विषोऽन्ये॥

युवाचार्यवर का यह अनुग्रह पाकर हमें अत्यधिक प्रसन्नता हुई। भले ही हम उस दिन देरी से पहुंची थीं, लेकिन हमें प्रेरणा और ज्ञान का नया 'डोज' प्राप्त हो गया।

ऐतिहासिक उपलब्धियां :

आचार्य श्री महाश्रमणजी ने उत्तरदायित्व संभालते ही केलवा चातुर्मास और आमेट मर्यादा महोत्सव का भव्य आयोजन किया। जसोल की धरती पर हुआ 'इतिहास दुर्लभ सिद्ध चातुर्मास' भक्तों की स्मृतियों में यादगार बन गया है।

इतिहास के झरोखों से देखें तो–

आचार्य श्री कालूगणी : वि. सं. 1979, बीकानेर चातुर्मास में एक साथ 13 दीक्षाएं दीं।

आचार्य श्री तुलसी: वि. सं. 1994, बीकानेर चातुर्मास में एक साथ 22 दीक्षाएं प्रदान कर कीर्तिमान रचा।

आचार्य श्री महाश्रमणजी : तुलसी जन्म शताब्दी वर्ष में संकल्प किया और बीदासर में एक साथ 43 दीक्षाएं देकर नया कीर्तिमान स्थापित किया। आचार्यश्री ने अनशनरत साध्वियों और वृद्धावस्था में संयम के इच्छुक भाई-बहनों की भावनाओं को भी पूरा किया है।

अविराम पदयात्रा और विनम्रता

इस भौतिक युग में संयम का संदेश देने के लिए उन्होंने मेवाड़, मरुधर, कच्छ और गुजरात की कठिन यात्राएं कीं। वे नेपाल और भूटान जैसे विदेशी क्षेत्रों तक भी पहुंचे, जहाँ पहले किसी आचार्य के चरण नहीं पड़े थे। वर्तमान में (वि. सं. 2082-83) लाडनूं, जैन विश्वभारती की धरा पर 'योगक्षेम वर्ष' के प्रसंग पर आपके प्रेरणादायी प्रवचन सुनकर चित्त को आह्लाद मिलता है।

इसके बाद दिल्ली, पंजाब और हरियाणा की यात्रा घोषित है। आपकी विनम्रता भी प्रशंसनीय है। 48 कि.मी. के लंबे विहार के बाद जिस प्रकार आपने शासन माता को वंदना की, वह दृश्य हर किसी को आश्चर्यचकित करने वाला था। आचार्य शिवमुनि महाराज ने भी विनम्रता की विशेष सराहना की है।

अभ्यर्थना :

एकादशवें आचार्य श्री महाश्रमणजी के 17वें पदाभिषेक अवसर पर यही अभ्यर्थना है जैसा कि 'रायपसेणिय सूत्र' में सूर्याभदेव के अभिषेक के समय कहा गया है:–

जय-जय नंदा! जय-जय भद्दा! महंते अजियं जिणाहि..
इंदो इव देवाणं, चंदो इव ताराणं...

प्रभो! आप युगों-युगों तक मानव जाति का पथ प्रदर्शन करते रहें। तेरापंथ धर्मसंघ के हर सदस्य की प्रज्ञा जागृत हो और आत्मा ऊर्ध्वमुखी हो। प्रयोगधर्मा आचार्य के श्री चरणों में श्रद्धासिक्त वंदना।

तुम जीओ वर्ष हजार,
हर वर्ष के दिन हों पचास हजार।

'गण शेखर वन्दना'

● मुनि मोहजीत कुमार ●

महाश्रमण शासन श्रृंगार, ऊर्जा के अक्षय भंडार।
गुरु का गौरव गाएँ हम, अन्तर भक्ति सजाएँ हम।।

आत्म रंग में रंगा हुआ अद्भुत व्यक्तित्व तुम्हारा
सकल संघ में सतत बहाओ अतुल क्षीर रस धारा
तुमसे यह शासन गुलजार, महिमा तेरी अपरम्पार।।

संघ-चमन तुझ सा माली पा हंसता-खिलता जाता
आत्मभाव अमृत सिंचन से हर पल पुलकन पाता
भव-भव के उजले हस्ताक्षर, जन जीवन के पुण्य पयोधर।।

करुणा कर्मशीलता सह मैत्री की धार बहाई
नव चिन्तन, नव सृजन योग से नव तरुणाई पाई
गुरुवर पौरुष के प्रतिमान, सबकी आस्था के आस्थान।।

दिव्य दिवाकर हे ज्योतिर्धर आत्म लक्ष्य कल्याणी
भिक्षु, जीत, तुलसी गणिवर की मुखर कर रहे वाणी
गुरुवर महाप्रज्ञ के पट्टधर
जय जय महाश्रमण गण शेखर।।

'देवाधिदेव भी तुम ही हो'

● साध्वी अणिमाश्री ●
● डॉ. साध्वी सुधाप्रभा ●

'देवाधिदेव भी तुम ही हो'
हर-हर शंकर, हर-हर शम्भू, महाश्रमण प्रभु तुम ही हो।
ब्रह्मा-विष्णु-महेश प्रभु तुम, देवाधिदेव भी तुम ही हो।

तेरापंथ के तारणहारे, भिक्षुगण रखवारे हो।
जिनशासन के ध्रुवतारे तुम, दुगड़ कुल उजियारे हो।
पुरुषोत्तम-श्रमणोत्तम प्रभुवर, बोहिदयाणं तुम ही हो।

तीन त्रिलोकीनाथ प्रभु तुम, तेरी क्या महिमा गाएं।
वीतराग-सी मुख-मुद्रा प्रभु महाश्रमण हर मन भाए।
आनंद-घन बरसाओ प्रभुवर, आनंददायी तुम ही हो।

रहनुमा तेरी रहमत से, धर्मसंघ में है आनंद।
कुशल शासना तेरी पाकर, रचेंगे नूतन अब हम छंद।
गण-रथ की है वल्गा कर में, महासारथी तुम ही हो।

नई लकीरें खींच रहे हो, गण-प्रांगण में विभुवर तुम।
यश-वल्लिरियां बढ़ती जाए, करें कामना मिलकर हम।
तेरापंथ गण-गगनांगण के, दिव्य-दिवाकर तुम ही हो।

गणमाली तेरी बगियां की, कलियां आज विकस्वर हैं।
तेरी पोथी के हम पन्ने, श्रद्धामय हर अक्षर हैं।
जीओ साल हजारों गुरुवर! करुणा-कुबेर तो तुम ही हो।

जन्मोत्सव पट्टोत्सव तेरा, कैसे तुम्हें बधाए हम।
जीवन है चरणों में अर्पित, नंदी-घोष सुनाएं हम।
जय-जय नंदा, जय-जय भद्रा, गण क्षेमंकर तुम ही हो।।

(लय - कलियुग बैठा मार...)

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
04 मई - 10 मई 2026

महातपस्वी धर्मदिवाकर युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी के 65वें जन्मोत्सव, 17वें पट्टोत्सव एवं 53वें दीक्षा दिवस पर सादर अभिवंदना

युग प्रधान आचार्यप्रवर चरणों में है शत्-शत् वंदन

● साध्वी वर्धमानयशा ●

युग प्रधान आचार्यप्रवर चरणों में है शत्-शत् वंदन,
शब्द नहीं भावों की भक्ति स्वीकार करो नेमानंदन।।

कलयुग में सतयुग सा शासन मोक्षवगन का नज़ारा है,
महावीर सा महातपस्वी महाश्रमण रखवारा है॥

सरदारशहर में जन्म लिया, शिक्षा भूमि सरदारशहर।
सरदारशहर संयम पाया, सरताज बने सरदारशहर।।
धन्य हुआ सरदारशहर, इतिहास रचा मनहारा है॥ कलयुग...।।

अदभुत तेरा यह शासन है, अनुपम तेरा अनुशासन है
निस्पृह योगी अलबेले, शोभे ग्यारहवां आसन है,
तेरापंथ के गगनांगण में, चमकें ज्यों ध्रुवतारा है॥ कलयुग...

नहिं देखा महावीर प्रभु को, नहीं सामने सीमन्धर
करुणा के महासागर इस युग के तुम ही तो तीर्थंकर
तीर्थंकर के प्रतिनिधि तेरा हमको सबल सहारा है। कलयुग...

युगों-युगों तक राज करो तुम मिले शासना वशायी,
नयनों में आकर्षण ऐसा नतमस्तक है सब अनुयायी
महाप्रन के पट्टधर में तुलसी का रूप निहारा है॥ कलयुग

तर्ज : धूप समय की लाख सताएं

महाश्रमण का समय नियोजन विलक्षण है

● साध्वी पुण्ययशा ●

समय प्रबंधन ही जीवन प्रबंधन है।
महाश्रमण का समय नियोजन विलक्षण है।।

जीवन के पलो को करते शुद्ध चित्त सर्जित,
श्रम समर्पण साधना,अनुशासन से सिंचित।
आराधना शुभंकर क्यों हो स्खलना किंचित,
कार्यशैली अरु जीवन शैली उदाहरण है।।

समयं गोयम मा पमायए सूत्र बना जिनकी शान
मैनेजमेंट के महागुरु तुम हो जन-जन के महाप्राण
करें समय पर काम देते प्रेरणाएं महान
समता अजय से प्रतिबिम्बित कण-कण है।।

काले कालं समायरे महावीर वाणी का सार
योजनाबद्ध तरीके से करें कार्य समयानुसार
सूचीबद्ध समय सारिणी बनाकर प्राथमिकता सार
सफलता के उतुंग शिखर पर प्रभु महाश्रमण है।।

आदर्श तुम्हारा अति ऊंचा जीवन बड़ा निराला
दमितेन्द्रिय योगी पिलाते शांत सुधारस प्याला
योगक्षेम वर्ष महोत्सव पर विकसे सद्गुण माला
समाधान उपधान प्रणेता करते हृदय का स्पर्शन है

प्रभो! नित्य नये रास रचाएं, मन पंछी आना चाहे

● साध्वी नीति प्रभा ●

पट्टोत्सव आज मनाएं, मन पंछी आना चाहे।
'प्रभो! नित्य नये रास रचाएं। मन पंछी आना चाहे।'

मौसम है खुशनुमा, हवाएं गीत गुनगुनाएं,
कुदरत के कारीगर, नूतन रंग खिलाएं।
चाँद सितारे, नक्षत्र सारे, गा रहे संगान।।

छोटी वय में प्रभुवर, संयम रत्न पाया।
गंभीर शौर्य तेरा, तुलसी मन भाया।
बन गए महाप्रज्ञ के पट्टधर, तारण - तरन जहान।।

सुसज्जित चंदेरी, अमल धवल अलबेली,
आम बांटेंगे विभूवर! गुड़ की रसभेली।
प्रतिमा का रूप हमें दो, बने संघ की शान।।

करुणा की कोमल फसलें, लहर-लहर लहराती,
क्षमा मूर्ति आर्जव मार्दव, के रंग रंग जाती।
पल-पल अरुणोदय जीवन में, हमारे हो उत्थान।।

युगों-युगों आलोक बिखेरो, यूंही गाए विरुदावली,
श्रम की गाथा सुन, रोमांचित होती रोमावली।
सेवा श्रम सिंगार बने, हमें दो ऐसा वरदान।।

संक्षिप्त खबर

टी.पी.एफ के तत्वावधान में चार दिवसीय कार्यशाला का आयोजन

हासन। आचार्य श्री महाश्रमण जी की सुशिष्य साध्वी पुण्ययशाजी के सान्निध्य में और टी.पी.एफ (TPF) हासन के तत्वावधान में चार दिवसीय कार्यशाला का आयोजन हुआ। इस कार्यशाला का आयोजन आचार्य भिक्षु के सिद्धांतों और तेरापंथ दर्शन को गहराई से समझने के लिए किया गया।

साध्वी श्री पुण्ययशाजी ने अपने संबोधन में कहा कि यह वर्ष 'भिक्षु जन्म द्विशताब्दी वर्ष' और 'भिक्षु चेतना वर्ष' के रूप में मनाया जा रहा है। उन्होंने आचार्य भिक्षु के वैराग्य, साधना और उनके द्वारा प्रतिपादित तेरापंथ की मौलिक मान्यताओं पर प्रकाश डाला। आचार्य भिक्षु को 'सर्व सिद्धि त्रयोदशी' के दिन सत्य की प्राप्ति हुई थी, इसलिए उन्हें इस दिन विशेष रूप से याद किया जाता है। कार्यक्रम में टी.पी.एफ हासन के अध्यक्ष प्रकाश भंसाली, महिला मंडल की अध्यक्षा विनीता सुराणा और अन्य गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

नवकार महामंत्र का जप अनुष्ठान

टोहाना। जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा एवं तेरापंथ महिला मंडल के संयुक्त तत्वावधान में विश्व नवकार दिवस के उपलक्ष्य में तेरापंथ भवन में नवकार महामंत्र का जप अनुष्ठान किया गया। इस जप अनुष्ठान का आह्वान जैन इंटरनेशनल ट्रेडिंग ऑर्गेनाइजेशन अर्थात जीतो द्वारा किया गया था और पूरे विश्व में जैन समाज द्वारा आज नवकार महामंत्र का जाप अनुष्ठान किया गया। तेरापंथ भवन में भी श्रावक समाज ने बड़ी श्रद्धा एवं भक्ति के साथ नवकार महामंत्र का जाप किया। और पूरा जैन समाज इसका जाप अनुष्ठान करता है। यह जैन धर्म की आत्मा है।

संस्कृति का संरक्षण-संस्कारों का संवर्द्धन
जैन विधि-अमूल्य निधि

नामकरण संस्कार

■ **सूरत।** ताल छापर निवासी सूरत प्रवासी प्रमोद बेला भंसाली के पुत्र-पुत्रवधू विनीत खुशबू भंसाली के प्रांगण में कन्या रत्न का जन्म हुआ। जिसका नामकरण संस्कार जैन संस्कार विधि से संस्कारक विजयकांत खटेड, बजरंग बैद, अभय बोथरा ने सम्पूर्ण विधि व मंगलमंत्रोच्चार से सानन्द संपन्न करवाया। नवजात कन्या का नाम खनक घोषित किया।

गृह प्रवेश

■ **सूरत।** श्रीडूंगरगढ़ निवासी सूरत प्रवासी तेजकरण दूगड़ के नूतन गृह प्रवेश का शुभारम्भ जैन संस्कार विधि से संस्कारक विजयकान्त खटेड, धर्मचंद सामसूखा ने सम्पूर्ण विधि व मंगलमंत्रोच्चार सानन्द सम्पन्न कराया।

■ **सूरत।** बीकानेर निवासी सूरत प्रवासी धीरज सुनीता बोथरा के नूतन गृह प्रवेश जैन संस्कार विधि से संस्कारक मनीष कुमार मालू,पंकज बुचा ने सम्पूर्ण विधि व मंगलमंत्रोच्चार सानंद सम्पन्न करवाया। संस्कारकों की प्रेरणा से घर के सभी सदस्यों ने व्यक्तिस्: त्याग प्रत्याख्यान किया।

प्रतिष्ठान शुभारम्भ

■ **सूरत।** सायरा निवासी जीतमल मेहता के सुपुत्र कपिल मेहता के नूतन प्रतिष्ठान का शुभारम्भ जैन संस्कार विधि से संस्कारक मनीष मालू, अरविंद बाफना ने सम्पूर्ण विधि व मंगलमंत्रोच्चार से सानन्द संपन्न करवाया।

■ **सूरत।** गुड़ा राम सिंह निवासी सूरत प्रवासी मदन लाल गादिया के पौत्र व सम्पत कुमार गादिया के सुपुत्र धवल सम्पत कुमार गादिया के प्रतिष्ठान का शुभारम्भ जैन संस्कार विधि से संस्कारक नरेंद्र कुमार भंसाली, पंकज बुचा ने सम्पूर्ण विधि व मंगलमंत्रोच्चार से सानन्द संपन्न करवाया

पाणिग्रहण संस्कार

■ **सूरत।** कोमल (राजस्थान) निवासी सूरत प्रवासी नरेश जैन की सुपुत्री प्रेक्षा जैन का शुभ पाणिग्रहण संस्कार भांडुप (मुंबई) निवासी- प्रवासी सतीश पंवार का सुपुत्र साहिल पंवार के साथ जैन संस्कार विधि से संस्कारक विजयकांत खटेड, मनीष कुमार मालू ने सम्पूर्ण विधि व मंगल मंत्रोच्चार से सानन्द संपन्न करवाया।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
हे प्रभो! यह तेरापंथ
04 मई - 10 मई 2026

साध्वी प्रमुखा श्री विश्रुतविभा जी के चयन दिवस पर हृदयोद्गार

श्रद्धा री बाजै झणकार

● साध्वी सोमप्रभा, लाडनूँ ●

चयन दिवस रै शुभ अवसर पर श्रद्धा री बाजै झणकार।
सति शेखरा रै चरणां में मंगल भावां रो उपहार॥

जन्म लियो चंदेरी भू पर, सरोज नाम हो थारो सुखकार।
जंवरीमलजी भंवरी बाई, तात मात स्यूं पाया संस्कार।
तुलसी रै कर कमलां दीक्षित, स्वप्न हुआं थारा साकार॥

समण श्रेणी में पहला दीक्षित, पहला नियोजिका इतिहास।
ज्ञान ध्यान में मस्त सदा ही, गुरु रो पायो पूर्ण विश्वास।
मुख्य नियोजिका पद पायो, महाप्रज्ञ गुरु कृपा अपार॥

प्रखर योग्यता कर्यो परीक्षण, महाश्रमण शासन सरदार।
साध्वी प्रमुखा पद सुशोभित, संभाल्यो जद स्यूं थे भार।
जीत्यो दिल साध्वी समाज रो, मीठो इमरत सो व्यवहार॥

कोड दिवाली राज करो थे, घणी करो शासन संभाल।
नवी नवेली चिंतन शैली, मां सी ममता हृदय विशाल।
अप्रमत्तता अजब गजब री, उन्नत है आचार विचार॥

चयन दिवस रै शुभ अवसर पर श्रद्धा री बाजै झणकार।
सति शेखरा रै चरणां में मंगल भावां रो उपहार॥

विरल विशिष्ट व्यक्तित्व को मैं करती हूँ शत-शत वंदन

● साध्वी काव्यलता, चेन्नई ●

विरल विशिष्ट व्यक्तित्व को मैं करती हूँ शत-शत वंदन
परम पद के प्रवर पथिक को मेरा श्रद्धासिक्त नमन॥

आत्मा में उपवन में तुमने वैराग्य ज्ञान के फूल खिलाए
शम-दम-क्षय के दीवट पर अनगिन मंगल दीप जलाए
ऊर्जामयी अभिनव आभा को मेरा श्रद्धासिक्त नमन॥

मन मंदिर में स्वाध्याय ध्यान का नित प्रति आलोक बिखेरा
अगम वाणी वातायन से स्व-स्वरूप का चित्र नया उकेरा
शीतल चंदा जैसी उजली छवि को श्रद्धासिक्त नमन॥

अरुणम रथ पर अरुणम पथ पर चरण रहे तेरे गतिमान
मंजिल उसको निकट बुलाती भीतर बाहर है धृतिमान
समता ममता की मूरत को मेरा श्रद्धासिक्त नमन॥

शुभ अवसर है शुभ वासर है श्रमणी गण की हो श्रृंगार
करूं कामना यही भावना खोलो गण में प्रगति द्वार
वात्सल्यमयी तुम विमल विभूति मेरा श्रद्धासिक्त नमन॥

गुण गाऊँ मैं, गाऊँ मैं, गुण गाऊँ मैं,

● साध्वी रौनक प्रभा ●

गुण गाऊँ मैं, गाऊँ मैं, गुण गाऊँ मैं,
साध्वी प्रमुखा चयन दिन आज बधाऊँ मैं।

अभिनंदन श्रम की तस्वीर का, अभिनंदन संयम के समीर का
ओजस्वी अहिंसा की बलिहारी जाऊँ मैं।

प्रवचन शैली तेरी निराली है,
बातों बातों में पिलाते अमृत प्याली है
पारस प्रज्ञा देख तेरी हरसाऊँ मैं।

समता, ममता की मूरत हो, क्षमता, गंभीरता की सूरत हो।
आत्मस्थ, स्वस्थ, मस्त रहो यही चाहूँ मैं।

चंदेरी की चांदनी बधाए, शुभ भावों की मंगल भावना सजाए
आनंद उमंग की वेला आई गुनगुनाऊँ मैं
श्रद्धा समर्पण तेरे जैसा मुझमें चाहूँ मैं।
शासना लम्बी तेरी अरसों पाऊँ मैं।

लय : राम आएंगे

उन्नयन के तीन चरण- तीन गुरु की मिली शरण

● साध्वी पुण्ययशा ●

महान दार्शनिक सुकरात से किसी ने पूछा- मनुष्य उन्नति करना चाहे तो उसे क्या करना चाहिए? प्रत्युत्तर में सुकरात ने पांच बिंदु बताये-

- अपना सामान्य दायरा बढ़ाओ (स्वार्थ छोड़ो)।
- संतोष धारण करो - संतोष से शांति और शांति से प्रसन्नता बढ़ती है।
- दूसरों के दोष देखने में अपनी शक्ति का अपव्यय मत करो।
- कठिनाइयों को देखकर भयभीत नहीं होना।
- हर किसी में जो अच्छाई हो उसे स्वीकार कर अपना ज्ञान और उमंग बढ़ाना।

सुकरात द्वारा प्रदत्त उपरोक्त पांच बिंदु परमार्थ, समता, गुणानुराग, साहस और अनुभव प्रौढ़ता का संकेत दे रहे हैं। जब मैं वर्तमान साध्वी प्रमुखा श्री विभूति नेत्री के जीवन कौशल व उन्नयन को देखती हूं तो मुझे लगता है ये पांचों बिंदु आपकी चेतना में पय मिश्री बन रमे हुए हैं। आपका जीवन अनेक दृष्टियों से प्रेरणास्रोत है। गरिमापूर्ण दायित्व का निष्ठापूर्वक वहन आपकी साधना की प्रखरता को मुखर कर रहा है। आपकी आभामंडलीय ऊर्जा व अदम्य उत्साह को उन्नयन के तीन चरण : तीन गुरु की मिली शरण के रूप में देखा जा सकता है।

तुलसीयुग - समण दीक्षा (समणी नियोजिका)
महाप्रज्ञ युग - मुख्य नियोजिका
महाश्रमण युग - साध्वी प्रमुखा

तुलसी युग - समण दीक्षा (समणी नियोजिका)

आचार्य श्री तुलसी एक क्रांतिकारी आचार्य थे। उन्होंने अपने युग में अन्यान्य क्रांतियों के साथ समण दीक्षा का भी एक क्रांतिकारी कदम उठाया। जिनके प्रारंभिक बैच में प्रतिभाशाली मुमुक्षु बहनों को समण दीक्षा प्रदान की। श्रद्धेया साध्वी प्रमुखा श्रीजी को उस प्रथम बैच में समण दीक्षा लेने का व प्रथम समणी बनने का गौरव प्राप्त हुआ। मोदी कुल की उज्ज्वल ज्योति, चंदेरी की दिव्य विभूति, गुरु तुलसी महायज्ञ की महनीय कृति बनी समण श्रेणि का पहला मोती। 'सद्गुण ही ज्ञान है और ज्ञान ही सद्गुण है' विद्वानों की यह उक्ति उस समय भी आपके दायित्व एवं कर्तृत्व को ऊंचाइयां प्रदान कर रही थी। आपकी प्रखर साधना, स्वाध्यायशीलता, ज्ञान की गहनता, विनययुक्त व्यवहार, मधुरभाषिता, संघनिष्ठा व कर्तव्यनिष्ठा आदि विविध विशेषताओं का मूल्यांकन करते हुए आपको समणी नियोजिका पद पर प्रतिष्ठित किया गया। आपके गुरुदेव की तपस्या में, अपनी ज्ञान गरिमा, आचार्य निष्ठा, साधना निष्ठा व अनुशासन को प्राप्त करने पर की गई गरिमामयी घोषणा का कार्य उसे आपके देश-विदेश में सेवा की प्रमाणपत्र को मुखर किया। इस प्रकार आप प्रथम समणी नियोजिका बनी।

महाप्रज्ञ युग : मुख्य नियोजिका

व्यक्तिगत विकास के पांच गुण हैं:

- सामने वाले की बात को धैर्यपूर्वक सुनना और अपनी बात को धैर्यपूर्वक समझाना।
- आवश्यकतानुसार प्रत्युत्तर देना या न देना।
- व्यर्थ की बहस में न पड़ना।
- किसी का अनावश्यक विरोध न करना।
- कम बोलना, मुनासिब बोलना।

मैंने श्रद्धेया साध्वी प्रमुखाश्रीजी को साध्वी नियोजिका, मुख्य नियोजिका और साध्वी प्रमुखा - तीनों रूपों में देखा है। ऐसा प्रतीत होता है कि ये पांचों गुण उन्होंने कम उम्र से ही आत्मसात किए हुए हैं। सादगी, सुदृढ़ आचार और मधुर व्यवहार से उन्होंने अपने जीवन को सुंदर बनाया है। समय का नियोजन व सदुपयोग तथा वर्तमान में जीने वाला ही आगे बढ़ने का अभिलेख लिख सकता है। समय का नियोजन जीवन यात्रा को सार्थक तथा सकारात्मक बनाने में सहायक होता है। सकारात्मक दृष्टिकोण वाला व्यक्ति सदा विकसित कमल की तरह होता है। वह सबको प्रिय लगता है। अपनी इन विशेषताओं के कारण सौम्यता, सरलता, मुग्धता आदि भाव उनके चेहरे पर सदा दिखाई देते हैं। उन्होंने कवि की निम्नलिखित पंक्तियों को साकार कर दिखलाया-

वक्ता से लड़कर जो नसीब बदल दे,
इंसान वही जो अपनी तस्वीर बदल दे॥

आपके आचार की पवित्रता, चारित्र की उज्ज्वलता, श्रमशीलता, गुरु के प्रति समर्पण भाव, अध्यात्मनिष्ठा इत्यादि महान गुणों का मूल्यांकन करते हुए श्री महाप्रज्ञ जी ने आपको मुख्य नियोजिका पद से अलंकृत करके आपको संघ में दूसरे स्थान पर प्रतिष्ठित कर दिया। आप तेरापंथ धर्म संघ के आज तक के इतिहास में मुख्य नियोजिका बनने वाली एकमात्र साध्वी प्रमुखा हैं।

महाश्रमण युग : साध्वी प्रमुखा

शिवखेड़ा ने अपनी पुस्तक 'यू कैन विन' (आप जीत सकते हैं) में लिखा है कि सफल लोग विशिष्ट काम नहीं करते, वे काम को विशिष्ट ढंग से करते हैं। साध्वी प्रमुखा जी की भी काम करने की अपनी शैली है। शुक्ल पक्ष के चंद्रमा की कलाओं के समान प्रवर्धमान आपका जीवन साधना और शिक्षा दोनों दृष्टियों से परिपक्व है। आपका खाद्य संयम अनूठा है। आप महीनों से ज्यादा द्रव्य उपवास करती हैं। वर्षों के लंबे उपवास का प्रत्यावर्तन तथा दीक्षा के कुछ समय बाद से आपने आजीवन मियान रखा है। आप बहुत कम सोती हैं। निद्रा संयम, इंद्रिय संयम, वाणी संयम, और खाद्य संयम बेजोड़ हैं। प्रभावशाली प्रवचन शैली, महाप्रज्ञ वाङ्मय, आगम सम्पादन, अराप्रज्ञ प्रबोध आदि का सृजन हिंदी, अंग्रेजी, संस्कृत, प्राकृत, राजस्थानी आदि अनेक भाषाओं का ज्ञान आपके व्यक्तित्व को अमाप ऊंचाइयां प्रदान कर रहा है। आपने तीन-तीन आचार्यों की कृपा से कर्तृत्व के अनमोल अवसर प्राप्त कर अपने व्यक्तित्व को प्रभावित बनाया। वर्षों तक शासन माता असाधारण साध्वी प्रमुखा श्री महाश्रमणीजी के पास अपने अनुभवों की संपदा को बढ़ाया। गुरु दृष्टि के प्रति जागरूकता आदि गुणों का अवलोकन करते हुए परमपूज्य, महातपस्वी, मुनिप्रधान आचार्य श्री महाश्रमणजी ने आपको साध्वी प्रमुखा जैसे गौरवान्वित पद पर अभिषिक्त कर दिया। संघ निष्ठा, गुरु निष्ठा, आज्ञा निष्ठा ने आपको सदैव संघ के सम्मानित पदों पर काम करने का अवसर दिया है। आपका तेजस्वी व्यक्तित्व, वर्चस्वी कर्तृत्व एवं कुशल नेतृत्व पूरे साध्वी समाज को नई-नई दिशाएं प्रदान कर रहा है।

सन् 2025 भायंदर से बैंगलोर जाते समय मार्ग में अचानक मेरे आंखों के आसपास हर्पिस हो गई। आपश्री को जानकारी मिलते ही तत्काल उपशम संदेश दिलवाया शीतलनाथ की गीतिका स्वाध्याय की प्रेरणा दी। संदेश पढ़कर ऐसा लगा मानो तकलीफ मेरे है और वेदना आप महसूस कर रहे हैं। शीतलनाथ की गीतिका बहुत समाधि और शांति का अनुभव हुआ। इस प्रकार निकटस्थ, दूरस्थ, धर्मसंघ की हर साध्वी की समाधिपूर्ण साधना के लिए अपनी वात्सल्यमयी निगाहों से हर पल आप पोषण देती रहती हैं।

आप इसी तरह साध्वी समाज के योगक्षेम की सतत संवाहिका बनी रहें। योगक्षेम वर्ष का स्वर्णिम अवसर विशाल धर्मसंघ की उपस्थिति, साध्वी प्रमुखा विश्रुतविभाजी का पांचवां चयन दिवस, काश! ऐसे महनीय पलों में सहभागी बनने का सौभाग्य हमें भी उपलब्ध होता। मनोनयन दिवस पर शतशः बधाइयां, मंगलकामनाएं।

महातपस्वी धर्मदिवाकर युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी के 65वें जन्मोत्सव, 17वें पट्टोत्सव एवं 53वें दीक्षा दिवस पर सादर अभिवंदना

योगक्षेम वर्ष को मना रहे

● मुनि कुमुद कुमार ●

धर्मसंघ के योगक्षेम कर्ता प्रभुवर,
योगक्षेम वर्ष सफलतम मना रहें।
योगक्षेम वर्ष के निमित से गणपति,
धर्मसंघ की नींव गहरी बना रहें।
दूरदर्शिता, सरलता, ज्ञान गंभीरता,
आध्यात्मिकता में डुबकी लगा रहें।

आचार उज्ज्वल बने प्राथमिकता,
जीवंतता से सबको ये सिखला रहें।
व्यवहार कुशलता कर्तव्य हमारा,
बोध जागरूकता से हमेशा बना रहें।
अनमोल निधि है संस्कार हमारे,
पल पल स्मृति में भाव ये जगा रहें।

अर्हत् वाणी है सदैव कल्याणी,
उसका मधुर रसपान करवा रहें।
पापभीरुता रहे जीवन में हर पल,
स्वयं सजग बनकर दिखला रहें।
करें संयम साधना आत्म आराधना,
जिससे प्रज्ञा दीप हर घट जलता रहें।

प्रवचन गुरुवर का प्रश्न हमारा,
समाधान से आत्मतृप्ति दिला रहें।
आत्मार्थी, पुरुषार्थी, कुशल सारथी,
विविधता से जीवन को संवार रहें।
संघ पुरुष रहेगा सदैव चिरायु,
संघ की बागडोर आप संभाल रहें।

अणु-प्रेक्षा, जीवन-तेरापंथ-तत्त्वदर्शन,
का लाडनूं में सिंचन कर रहें।
प्रशिक्षण सिंचन से प्रभु का पंथ,
सतत प्रगति पथ पर बढ़ता रहें।
'कुमुद' जाए बलिहारी भिक्षु गण की,
नन्दन वन सा गण महकता रहें।

महाश्रमण महिमा : तीन दिव्य दिवस

● शालिनी जैन, जयगांव ●

दीक्षा दिवस की स्वर्णिम बेला, छाया है भक्ति का रंग।
आनंद उत्सव आया है, गुरु चरणों में रम जाएँ हम।।
दिव्य रूप में जन्म लिया, हो गई धन्य वसुंधरा पावन।
आलोकित हुई सारी दिशाएं, जब पुण्य पुंज बन आया,
नेमा नंदन।।

छोटी वय में ही पाया, जग की नश्वरता का ज्ञान।
अन्तर्मन का द्वार खुला, हुआ दीक्षा का आह्वान।।
तुलसी, महाप्रज्ञ की मिली प्रेरणा, शुभ कर्मों का संयोग बना।
आत्मा की उज्जवल आभा से, गुरु बन गये दीर्घमना।।

ढोल नगाड़े जयकारों से, धरती अंबर गूंज उठे।
फलित पुण्य हो गया संघ का, गुरु महाश्रमण गणराज बनें।।
मिट गया तिमिर जगत का, माटी भी बन गई चन्दन।
पतझड़ में मधुमास बने तुम, भर दिया प्राणों में स्पंदन।।

वंदन उस सौम्य दृष्टि को, जिसमें बहती करुणा की धार।
मुख मंडल पर तेज अनूठा, जो है जिन शासन का श्रृंगार।।
चेहरे पर मुस्कान मनोहर, श्वेत वेश में उजला दर्पण।
अरिहंतों की राह पर चलते, मोक्ष मार्ग के राही बन।।

संघ पति के श्री चरणों में, है मेरा सर्वस्व समर्पण।
दीक्षा दिवस की स्वर्णिम बेला, छाया है भक्ति का रंग।।
आनंद उत्सव आया है, गुरु चरणों में रम जाएँ हम।
जय जय गुरु महाश्रमण, जय जय गुरु महाश्रमण।।

❖ सरल व्यक्ति के जीवन में धर्म संस्थित होता है। माया अविश्वास का घर है। जहां सरलता है, वहां आत्मशुद्धि है, विश्वास भी है।

— आचार्य श्री महाश्रमण

परम पूज्य आचार्यश्री महाप्रज्ञजी के सत्रहवें महाप्रयाण दिवस पर

परम पूज्य आचार्य श्री महाश्रमण जी द्वारा रचित गीत

अध्यात्म की शरण में सुखवास हम करते रहें।
सद्भक्ति में संलीन बन संबोध निधि भरते रहें।।

प्रज्ञा जगे हमारी परम की संप्राप्ति हो।
संकल्प बल प्रबल हो दुर्भावगण मरते रहें।।१।।

सद्ध्यान की विधा को विभु ने किया उजागर।
समता रहे निरंतर दुर्गुण निकर गरते रहें।।२।।

संन्यास की डगर पर हो चरणविन्यास वर।
गहरी जगे मुमुक्षा भवसिंधु को तरते रहें।।३।।

गुरु वार्षिकी दिन षोडश लाडनूं पुर जै.वि.भा.।
सन्मार्ग पर सना सब मजबूत पग धरते रहें।।४।।

प्रभु महाप्रज्ञ को प्रतिपल प्रवर श्रद्धामय नमन।
जय जय 'महाश्रमण' हो प्रभुवर्य को स्मरते रहें।।५।।

लय- उठ जाग रे मुसाफिर ....

विश्व शांति के लिए भव्य सामायिक सहित जाप का आयोजन

टी.दासरहल्ली।

स्थानीय तेरापंथ सभा भवन में जीतो(JITO) बैंगलोर नॉर्थ एवं साउथ जोन द्वारा आयोजित विश्व नवकार महामंत्र दिवस के उपलक्ष्य में विश्व शांति के लिए भव्य सामायिक सहित जाप का आयोजन किया गया।

सकल समाज के सभी श्रावक-श्राविकाओ की गरिमामयी उपस्थिति के बीच 117 सामायिक के साथ नवकार साधना कर विश्व शांति की कामना की गई।

स्थानकवासी सम्प्रदाय से श् मिश्रिलाल देसरला ने सामूहिक सामायिक के प्रत्याख्यान करवाये।

कार्यक्रम के सफल संयोजन में पुर्व तेयुप अध्यक्ष एवं सामायिक संयोजक दिलीप पोखरना, सभा ट्रस्ट मंत्री प्रवीण बोहरा, निवर्तमान महिला मंडल अध्यक्षा नेहा चावत एवं वर्तमान तेयुप मंत्री दिलीप पितलिया का श्रम रहा। संचालन सभा मंत्री प्रवीण बोहरा ने किया ।

8 दिवसीय प्रेक्षाध्यान शिविर का आयोजन

कोबा-अहमदाबाद।

प्रेक्षा विश्व भारती द्वारा 8 दिवसीय प्रेक्षाध्यान शिविर का आयोजन किया गया। आचार्य श्री महाश्रमण जी के आज्ञानुवर्ती मुनिश्री मुनि सुव्रतकुमारजीने उद्घाटन सत्रमें प्रेक्षाध्यान की उपसंपदा का शिविरार्थीयों को संकल्प कराते हुए कहा, कि प्रेक्षाध्यान शांति का राजमार्ग है इसे जो जीवन में प्रयोगशाला बनाता है वो सुखी शांति राजमार्ग की और अग्रसर हो जाता है आवशयकता है कि नियमीत प्रेक्षाध्यान के प्रयोगो को जीवन का अंग बनाएं। समणी निदेर्शिका डॉ. मंजुप्रज्ञाजी एवं समणी स्वर्णप्रज्ञाजी ने शरीर विज्ञान, प्रेक्षाध्यान, कायोत्सर्ग, अनुप्रेक्षाएवं मंत्रप्रेक्षा के प्रयोगों पर आध्यात्मिक और वैज्ञानिक आधार पर गहराई से प्रकाश डाला। सूरत से प्रेक्षा प्रशिक्षिका रेणु नाहटा व अहमदाबाद से प्रेक्षा प्रशिक्षक जवेरीलाल संकलेचा ने आसन प्राणायाम गमन योग जिज्ञासा समाधान व समय बद्धता के प्रति विशेष सक्रियता रखी। उद्घाटन सत्र में प्रेक्षाध्यान एकेडेमी के अध्यक्ष भेरुलाल चौपडा ने शिविरार्थीयों का स्वागत किया।

ONE WORLD ,ONE CHANT TOGETHER FOR PEACE (JITO) कार्यक्रम आयोजित

दक्षिण मुंबई।

विश्व नवकर महामंत्र, ONE WORLD, ONE CHANT TOGETHER FOR PEACE (JITO) कार्यक्रम तेरापंथ समाज दक्षिण मुंबई द्वारा आचार्य श्री महाश्रमण जी कि सुशिष्या शासन श्री साध्वी शिवमाला जी ठाणा-३ की सन्निधि में सम्पन्न हुआ।

साध्वी जी ने नमस्कार महामंत्र पर अपने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम में श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा दक्षिण मुंबई के अध्यक्ष सुरेश डागलिया जी ने नवकर मंत्र कितना उपयोगी है, हमारे दैनिक जीवन में अपनाना चाहिये एवं पधारे सभी सदस्यों का स्वागत किया।

आचार्य महाप्रज्ञ विद्यानिधि फाउंडेशन के कार्याध्यक्ष गणपतलाल डागलिया ने कहा पूरा विश्व आज नवकर मंत्र जप के इस पावन पर्व से जुड़ा है ।कार्यक्रम में आचार्य महाप्रज्ञ विद्यानिधि फाउंडेशन से अध्यक्ष कुंदनमल धाकड़, महामंत्री लक्ष्मीलाल डागलिया आदि की उपस्थिति रही।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
हे प्रभो! यह तेरापंथ
04 मई - 10 मई 2026

संबोधि

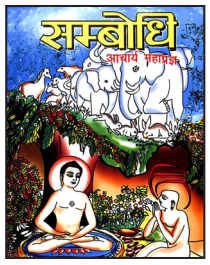

परिशिष्ट

-आचार्यश्री महाप्रज्ञ

स्वभाव की खोज में उत्सुक साधक को इन दोनों असद् ध्यानों से सतत सावधान रहना चाहिए। उसे यह जान लेना चाहिए कि ये आत्म-प्रगति में किसी तरह साधक नहीं, बाधक हैं। अपनी वृत्तियों पर सतत प्रहरी बनकर निरीक्षण करते रहना साधक का परम धर्म है। जैसे विचार करते हो वैसा ही बन जाते हो। विश्व का नियम है, जो जैसा सोचता है, करता है, बोलता है वह सब लौटकर पुनः उसमें ही प्रविष्ट हो जाता है। सब गति वर्तुलाकार है। इसलिए सन्तों ने सब तरह से मनुष्य को सावधान करने का प्रयास किया है। तुम अपने भाग्य के निर्माता हो। तुम अपनी क्रिया के प्रति जागरूक बनो। ऐसा कोई आचरण, व्यवहार मत करो जो अंततः तुम्हारी ही गर्दन काटने वाला हो।

प्रशस्त ध्यान है-धर्म और शुक्ल । अप्रशस्त से मुक्त होने का अर्थ है प्रशस्त का द्वार खोलना। प्रशस्त खुला है, अनावृत है। आवरण है तो अप्रशस्त का है। जैसे ही व्यक्ति उसे छोड़ता है, प्रशस्त प्रगट हो जाता है। अप्रशस्तता अस्वाभाविक है, वह आगन्तुक है। अतिथि नियतवास कैसे कर सकता है ? किन्तु यह सब सम्भव है जब हमें यह पता हो कि यह अतिथि है या शरण्य है। हम यदि उसे अपना ही मान लेते हैं तब असंभव है। प्रशस्त सहज है, स्वाभाविक है स्वास्थ्य की भांति।

अपने घर में आना धर्म है। यात्रा का मुख स्रोत के अभिमुख होता है तब केन्द्र पर पहुंचा जाता है। चेतना का चेतना में लौट आना धर्म का परम पवित्र और सर्वोत्तम पद है। 'अप्पा अप्पम्मि रओ' आत्मा में रमण करना-यह शुक्ल-ध्यान का अंतिम चरण है। यात्रा की यहां समाप्ति हो जाती है। किन्तु यह सहज प्राप्य नहीं है। इसलिए आचार्यों ने कहा-साधक स्थूल से सूक्ष्म और अलक्ष्य से लक्ष्य की दिशा में अग्रसर हो, सालंबन और निरालंबन के विभाजन का यही कारण है।

सालम्ब ध्यान में ध्याता और ध्येय का द्वैत बना रहता है। जो आलंबन है ध्याता उस पर अपने चित्त को एकाग्र करता है। विकेन्द्रित मन को सब ओर से समेट कर एक दिशामुखी बना लेना ही इसका कार्य है। जब मन इसमें निष्णात हो जाता है तब निर्विचार, विचारशून्य-अमन No Miud की दिशा में कठिनाई नहीं होती। इसलिए इसका पूर्वाभ्यास सामान्य साधकों की स्थिति को दृष्टिगत रखकर उपयोगी समझा है। इनके अनेक भेद हो सकते हैं। साधारण तथा ध्यान-साधकों ने ध्यान को चार भागों में विभक्त किया है-

(१) पिण्डस्थ ध्यान

(३) रूपस्थ ध्यान

(२) पदस्थ ध्यान

(४) रूपातीत ध्यान

(१) पिण्डस्थ ध्यान

पिंड का अर्थ है-शरीर।

शरीर के विविध अव्यवों को केन्द्र बनाकर चित्त को एकाग्र करना पिंडस्थ ध्यान है। पिण्डस्थ-पिंड में स्थित होना। शरीर बहुत स्थूल है। शरीर से हमारा परिचय भी बहुत है और यह भी कहा जा सकता है, बहुत कम लोग शरीर से सम्यक् परिचित होंगे। शरीरशास्त्रियों से भी वह अब तक पूर्णतया विज्ञात नहीं हुआ है और हो सकेगा इसमें भी संदेह है। योगियों ने अपने आंतरिक स्थिरीकरण और अनुभवों से जैसा उसे जाना है वह उन लोगों के लिए अति आश्चर्यजनक है। किन्तु हमें यहां स्थूल और सूक्ष्म विज्ञात और अविज्ञात दोनों ही आलंबनो और उसके परिणामों पर ध्यान देना है। स्थूल दृष्टि से केन्द्रीकरण के माध्यम हैं (१) सिर (२) भ्रू (३) तालु (४) ललाट (५) मुंह (६) नेत्र (७) कान (८) नासाग्र (९) हृदय (१०) नाभि। कुछ अन्य स्थानों का निर्देश भी मिलता है जैसे कंठकूप, जिह्वाग्र, जिह्वामूल जिह्वामध्य, 'त' के उच्चारण का स्थान मेरुदंड आदि।

(क्रमशः)

श्रमण महावीर

समता के तीन आयाम

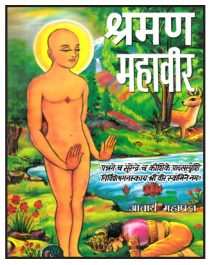

महावीर के दर्शन में अनन्त परमाणु हैं और अनन्त आत्माएं। प्रत्येक परमाणु और प्रत्येक आत्मा बिम्ब है। हर बिम्ब का अपना-अपना प्रतिबिम्ब है। गुण का स्थायीभाव बिम्ब है और उसकी गतिशीलता प्रतिबिम्ब है।

महावीर ने इस दर्शन की भूमि में साधना का बीज बोया। अचेतन के सामने साधना का कोई प्रश्न नहीं है। उसका होना और गतिशील होना-दोनों प्राकृतिक नियम से जुड़ा हुआ है किन्तु उसकी गतिशीलता प्राकृतिक नियम से संचालित नहीं होती। वह ज्ञानपूर्वक बदलता है-जो होना चाहता है उस दिशा में प्रयाण करता है। यही है उसकी साधना। मनुष्य का ज्ञान विकसित होता है इसलिए वह विकास के चरम-बिन्दु पर पहुंचना चाहता है। उसके सामने चेतना की दो भूमिकाएं हैं-एक द्वन्द्व की और दूसरी द्वन्द्वातीत। जीवन और मृत्यु, सुख और दुःख, मान और अपमान, हर्ष और विषाद जैसे असंख्य द्वन्द्व हैं। ये मन पर आघात करते रहते हैं। उसमें मन का संतुलन बिगड़ जाता है। वह विषम हो जाता है।

द्वन्द्व के आघात से बचने के लिए महावीर ने समता की साधना प्रस्तुत की। उनके द्वारा प्रतिपादित धर्म का नाम है- समता धर्म, सामायिक धर्म। इसके दो अर्थ हैं-

१. प्राणी-प्राणी के बीच में समता की खोज और अनुभूति ।

२. द्वन्द्वों के दोनों तटों के बीच में मानसिक समता के पुल का निर्माण।

समता का विकास मैत्री, अभय और सहिष्णुता-इन तीन आयामों में होता है। जिस व्यक्ति में प्रतिकूल परिस्थिति को सहन करने की क्षमता जागृत नहीं होती, वह अभय नहीं हो सकता और भयभीत मनुष्य में मैत्री का विकास नहीं हो सकता। जिसमें अनुकूल परिस्थिति को सहन करने की क्षमता जागृत नहीं होती, वह गर्व से उन्मत्त होकर दूसरों में भय और अमैत्री का संचार करता है। तीनों आयामों में विकास करने पर ही समता स्थायी होती है।

समता एक आयाम में विकसित नहीं होती। यह होता है कि हम किसी व्यक्ति को मैत्री के आयाम में अधिक गतिशील देखते हैं, किसी को अभय के आयाम में और किसी को सहिष्णुता के आयाम में। इनमें से एक के होने पर शेष दो का होना अनिवार्य है। समता के होने पर इन तीनों का होना अनिवार्य है। इन तीनों का होना ही वास्तव में समता का होना है।

१. मैत्री का आयाम

कालसौकरिक राजगृह का सबसे बड़ा कसाई था। उसके कसाईखाने में प्रतिदिन सैकड़ों भैंसे मारे जाते थे। एक दिन सम्राट श्रेणिक ने कहा, कालसौकरिक!

तुम भैंसों को मारना छोड़ दो। मैं तुम्हें प्रचुर धन दूंगा।'

कालसौकरिक को सम्राट् का प्रस्ताव पसन्द नहीं आया। भैंसों को मारना अब उसका धन्धा ही नहीं रहा, वह एक संस्कार बन गया। उन्हें मारे बिना कालसौकरिक को दिन सूना सूना-सा लगता। उसने सम्राट् के प्रस्ताव को अस्वीकार कर दिया। सम्राट् ने इसे अपना अनादर मान कालसौकरिक को अन्धकूप में डलवा दिया। एक दिन-रात वहीं रखा।

श्रेणिक ने भगवान् महावीर से निवेदन किया- 'भंते! मैंने कालसौकरिक से भैंसे मारने छुड़वा दिए हैं।'

'श्रेणिक ! यह सम्भव नहीं हैं।'

'भंते! वह अन्धकूप में पड़ा है। वह भैंसों को कहां से मारेगा?'

'उसका हृदय-परिवर्तन नहीं हुआ है, फिर वह अपने प्रगाढ़ संस्कार को दंड-बल से कैसे छोड़ सकेगा?'

'तो क्या भगवान् यह कहते हैं कि उसने अन्धकूप में भी भैंसों को मारा है?'

'हां, मेरा आशय यही है।'

'भंते! यह कैसे सम्भव है?'

'क्या उस अन्धकूप में गीली मिट्टी नहीं है?'

(क्रमशः)

धर्म है उत्कृष्ट मंगल

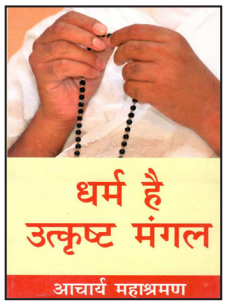

-आचार्यश्री महाश्रमण

अनुशासन का प्रतीक : मर्यादा-महोत्सव

श्रुतानुश्रुत कहा जाता है कि एक बार जयाचार्य लाडनूं में विराजमान थे। वे साहित्य रचना कर रहे थे और युवाचार्य मघवा जनता में प्रवचन कर रहे थे। व्याख्यान में वे कुछ स्खलित हो गए। उस समय जयाचार्य का ध्यान उस और चला गया। फिर श्रीमज्जयाचार्य व्याख्यान में पधारे। व्याख्यान में स्खलित होने के लिए युवाचार्य मघवा को उलाहना दिया। श्री मघवा ने विनम्रता से उलाहना स्वीकारा। जनता इस दृश्य को देख स्तब्ध थी। दूसरे दिन अनुशासन के सूत्रधार जयाचार्य ने गत दिवस के प्रसंग को उद्धत करते हुए मघवा की भूरि-भूरि प्रशंसा की मानो कि इस प्रसंग से उन्होंने सबको एक बोध-पाठ सिखाया कि विनम्रता से गुरू की डॉट को स्वीकारना चाहिए। परानुशासन की तब तक उपयोगिता होती है जब तक व्यक्ति का आत्मानुशासन नहीं जागता। आत्मानुशासन जगने के बाद परानुशासन कृत-कृत्य हो जाता है।

अनुशासन वहां अपेक्षित है जहां संवेगों पर अनियन्त्रण होता है, कषाय की प्रबलता होती है, इच्छा का सीमाकरण नहीं होता। इस स्थिति में जो बड़ों के अनुशासन के सहारे चलता है, वह विकास की उच्च भूमिका पर आरूढ़ हो सकता है। मर्यादा-महोत्सव हर वर्ष अनुशासन की प्रेरणा देता रहे और उसके आलोक में दुनिया का पथ प्रशस्त होता रहे।

दीक्षा

जैन दर्शन के अनुसार प्रत्येक आत्मा का स्वतंत्र एवं त्रैकालिक अस्तित्व है। वह सदा थी, है और रहेगी। कोई आत्मा किसी परम सत्ता के अधीनस्थ नहीं है। आत्मा अपने कृत कर्मो के अनुसार स्वयं सुख-दुःख का अनुभव करती है, जन्म-मरण के चक्र में घूमती रहती है। आत्मा में क्रोध, अभिमान, माया और लोभ के संस्कार जितने-जितने पुष्ट होते हैं उतना-उतना दुःख बढ़ता है, सुख घटता है। ये संस्कार जितने-जितने क्षीण होते हैं। उतना-उतना सुख बढ़ता है, दुःख घटता है।

सम्राट श्रेणिक महात्मा बुद्ध के दर्शनार्थ गया। वन्दन कर वह बुद्ध के समीप बैठ गया। उसने बुद्ध के पास बैठे भिक्षुओं को देखा। उनके चेहरे प्रसन्नता बिखेर रहे थे। यह देख राजा चिंतन की गहराई में डूब गया। उसके मन में एक जिज्ञासा जन्मी। ये भिक्षु जिन्हें न पूरा भोजन मिलता है और न पानी। जमीन ही इनकी शय्या है, और भी नाना प्रकार के कष्टों से परिपूर्ण है इनका जीवन। फिर भी ये कितने प्रसन्न हैं? दूसरी और मेरे राजकुमार, जिन्हें सब प्रकार की भौतिक सुख-सुविधाएं प्राप्त हैं, फिर भी वह प्रसन्नता उनके चेहरों से नहीं टपकती। क्या राज है इसका? बहुत सोचा पर राजा को समाधान नहीं मिला। समाधान था बुद्ध के पास। राजा ने बुद्ध से पुछा तो उन्होंने कहा- राजन्! प्रसन्नता का सम्बन्ध भौतिक सुख-सुविधा से नहीं, निस्पृहता और समता से है। मेरे भिक्षु अध्यात्म का जीवन जीते हैं। इन्होंने वर्तमान में जीना सीख लिया है। भूत, भविष्य की स्मृति और कल्पनाओं की उधेड़बुन से मुक्त रहकर ये वर्तमान-द्रष्टा बन गये हैं। इसलिए ये अनवरत सहज प्रसन्नता का अनुभव करते हैं।

तुम्हारे राजकुमार सुख-सुविधा का जीवन जी सकते हैं पर शान्ति का नहीं। क्योंकि वे आकांक्षाओं को पाले हुए हैं। वे भूत-भविष्य में जीना जानते हैं, पर वर्तमान में जीना पूरा नहीं जानते।

हर प्राणी सुखी बनना चाहता है। सुख दो प्रकार का होता है- पदार्थ-जनित सुख और आत्मिक सुख। पदार्थ-जनित सुख स्थायी नहीं होता, वह विनाशशील होता है, क्योंकि वह पराश्रित एवं परापेक्ष सुख है। मनोज्ञ पदार्थ का संयोग जब तक है, तब तक उसका अस्तित्व है। ज्योंही उस पदार्थ का संयोग मिटा, वह सुख भी मिट जाता है।

अध्यात्म-साधना का बहुत बड़ा सूत्र है वर्तमान में जीना। वर्तमान-जीवी साधक के कषाय प्रतुन हो जाते हैं। उसके क्रोध, अहं, लोभ आदि विकार कृश हो जाते हैं। वर्तमान में जीने वाला व्यक्ति निर्विचारता के निकट पहुंच सकता है। निर्विचारता की स्थिति में भीतरी आनन्द प्रस्फुटित होता है। आत्मिक सुख स्वाश्रित एवं स्वापेक्ष होता है। वह पदार्थ पर निर्भर नहीं होता। आत्मा का अपने आप से कभी वियोग नहीं होता, इसलिए आत्मिक सुख स्थायी एवं अविनाशी होता है।

आध्यात्मिक विकास और क्षमता के विकास के लिए हम अनपेक्षित स्मृति और कल्पना से बचकर वर्तमान में जीना सीखें, भावक्रिया का अभ्यास करें, यह श्रेयस्कर है। उसके लिए अपेक्षा है अपनी इन्द्रियों और मन पर नियंत्रण पाने को। भोग से त्याग की ओर मुड़ने की। (क्रमशः)

संघीय समाचारों का मुखपत्र

तेरापंथ टाइम्स
की प्रति पाने के लिए क्यूआर
कोड स्कैन करें या आवेदन करें
https://abtyp.org/prakashan

समाचार प्रकाशन हेतु
abtyptt@gmail.com पर ई-मेल अथवा
8905995002 पर व्हाट्सअप करें।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद्

मई 2026
सप्ताह के विशेष दिन

08 मई
भगवान श्रेयांसनाथ च्यवन कल्याणक

10 मई
भगवान मुनिसुव्रत जन्म कल्याणक

स्मृति विकास कार्यशाला 'कैसे करें स्मृति का विकास' का आयोजन

उत्तर कोलकाता।

युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी के सुशिष्य मुनि जिनेश कुमार जी ठाणा-3 के सान्निध्य में 'स्मृति विकास'कार्यशाला का आयोजन तेरापंथ युवक परिषद् उत्तर कोलकाता द्वारा विनायक एन्क्लेव में कम्युनिटी हॉल में किया गया। जिसका विषय था- कैसे करें स्मृति का विकास'कार्यशाला में अच्छी संख्या में श्रावक-श्राविकाएँ उपस्थित रहे।

इस अवसर पर उद्बोधन प्रदान करते हुए मुनि जिनेश कुमार जी ने कहा- जीवन की सफलता का मुख्य आधार है - स्मृति विकास । हमारा मस्तिष्क चैतन्य शक्ति का अक्षय भंडार है। यह किसी सुपर कम्प्यूटर से कम नहीं है। विस्मृति वर्तमान की ज्वलंत समस्या है।

इस समस्या से हर वर्ग, हर जाति, हर सम्प्रदाय के लोग ग्रसित है। इस समस्या से निजात पाने के लिए सकारात्मक सोच, जप, तप, ध्यान भोजन विवेक आदि कि प्रयोग कारगर सिद्ध हो सकते हैं। स

्मृति विकास के लिए महाप्राण ध्वनि, ज्ञान केन्द्र पर पीले रंग का ध्यान, दीर्घ श्वास प्रेक्षा, ज्ञान मुद्रा, ताडासन, कोणासन, पाद हस्तासन समपादासन, शशांक आसन, सर्वेन्द्रिय संयम मुद्रा आदि के प्रयोग महत्त्वपूर्ण है। ॐ ऐं ऊं, ऊँ नमो नमस्य का जप अध्ययन में निरंतरता व प्रसन्नता का भाव भी स्मृति विकास में सहयोगी होता है।

मुनिश्री ने स्मृति विकास के लिए ध्यान के प्रयोग कराते हुए पावन प्रेरणा प्रदान की। सहमंत्री विरेन्द्र विनायक ने आभार व्यक्त किया।

संक्षिप्त खबर

आध्यात्मिक मिलन

सिरियारी। आचार्य भिक्षु समाधि स्थल संस्थान के महाप्रज्ञ भवन में आचार्य श्री महाश्रमण जी के सुशिष्य मुनि श्री मुनिव्रत स्वामी ठाणा-3 एवं साध्वी पीयूष प्रभा जी ठाणा-4 का आध्यात्मिक मिलन सौहार्दपूर्ण एवं स्नेहिल वातावरण में हुआ। मुनि चैतन्य कुमार 'अमन' तथा मुनि गिरीश कुमार जी ने यात्रा की सुखसाता पूछते हुए सुखद यात्रा की मंगल की तथा लाडनूं पूज्य गुरुदेव के सानिध्य में लाभ लेने हेतु अहोभाव प्रकट किया। साध्वी डॉ पीयूषप्रभा जी अपनी सहयोगी साध्वी भावनाश्री जी, साध्वी सुधा कुमारीजी, साध्वी दीप्ति यशाजी के साथ सिरियारी से आगे विहार करती हुई अप्रैल के अन्तिम सप्ताह में लाडनूं में परम पूज्य वर के दर्शन कर योगक्षेम में लाभान्वित हो सकेगी।

ज्ञानशाला के नव कार्य वर्ष की शुरुआत

हैदराबाद। युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी के पावन निर्देशन में श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, सिकंदराबाद के तत्वावधान में ज्ञानशाला के नव कार्य वर्ष का शुभारंभ हो चुका है। ज्ञानशाला प्रकोष्ठ, महासभा द्वारा आंचलिक संयोजकों के द्वि वर्षीय कार्यकाल की नियुक्तियों के साथ ही नव कार्य वर्ष की शुरुआत हो गई। तेलंगाना-आंध्रा के प्रभारी के रूप में आगामी कार्यकाल के लिए सरोज लोढ़ा को वर्ष 2026-28 के लिए आंचलिक संयोजक नियुक्त किया गया। आंचलिक सह संयोजक के रूप में यशोदा कोठारी का चयन किया गया। तेलंगाना के क्षेत्रीय संयोजक के रूप में संगीता गोलछा की पुनः नियुक्ति की गई। इसी क्रम में क्षेत्रीय संयोजक द्वारा नई टीम की घोषणा व पद- आवंटन समारोह का आयोजन डी.वी. कॉलोनी स्थित तेरापंथ भवन में किया गया।

वर्षीतप तपस्वियों का किया अभिनंदन

विजयनगर, बैंगलोर। तेरापंथ महिला मंडल विजयनगर द्वारा दिनांक 9 अप्रैल को विजयनगर तेरापंथ भवन में वर्षीतप करने वाले तपस्वियों का अभिनंदन समारोह आयोजित किया गया। जिसमें वर्ष भर कठिन तप द्वारा अपने -अपने कर्मों की निर्जरा करते हुए अपनी आत्मा को कुंदन बनाने वाले तपस्वियों के तप की अनुमोदना मंडल की बहनों द्वारा की गई। कार्यक्रम का शुभारंभ नमस्कार महामंत्र के मंत्र मंगल उच्चारण से हुआ। तत्पश्चात् अध्यक्ष महिमा पटावरी ने तपस्वियों एवं सभी आगंतुकों का स्वागत अभिनंदन करते हुए तपस्वियों की अनुमोदना की। कार्यक्रम में तपस्विनी दस तपस्वियों का अभिनंदन किया गया, जिनका परिचय मंत्री सरिता छाजेड़ एवं सहमंत्री हंसा दुगड़ ने दिया। सभी तपस्वियों के पारिवारिक जनों ने तप अनुमोदना में अपने भावों की अभिव्यक्ति दी। निवर्तमान् अध्यक्ष मंजू गादिया ने अपने विचार व्यक्त किये तथा बेबी रियांशी ने कविता की प्रस्तुति दी। कार्यक्रम का कुशल संचालन संयोजिका अंजू सेठिया तथा आभार ज्ञापन उपाध्यक्ष सुमित्रा बरडिया ने किया।

तेरापंथ दर्शन संबोध कार्यशाला का आयोजन

हासन।

युग प्रधान, महातपस्वी आचार्य श्री महाश्रमण जी की सुशिष्या साध्वी पुण्ययशाजी के सानिध्य में टी.पी.एफ. के तत्वावधान में चार दिवसीय कार्यशाला का शुभारंभ किया गया. साध्वी श्री जी द्वारा नवकार मंत्र की ध्वनि से कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया. टी. पी. एफ. की बहनों द्वारा मंगलाचरण प्रस्तुत किया गया. साध्वी बोधि प्रभाजी ने कहा- आचार्य भिक्षु तेरापंथ के महान प्रणेता थे. उनका जन्म आषाढ़ शुक्ला त्रयोदशी को हुआ जिसे सर्व सिद्धा त्रयोदशी भी कहा जाता है. तद्नुसार उन्हें अपने चरम लक्ष्य की प्राप्ति में पूर्व सफलता मिली. अतः उनका सर्व सिद्धा त्रयोदशी के दिन जन्म होना उनके सफल भावी जीवन का संकेत था. उनकी वैराग्य साधना अद्भुत थी. उनकी अंतर्दृष्टि जाग्रत थी। साध्वी पुण्ययशाजी ने अपने मंगल उद्बोधन में कहा- यह भिक्षु द्विशताब्दी वर्ष चल रहा है. इसमें तेरापंथ दर्शन संबोध कार्यशाला का आयोजन तेरापंथ व आचार्य भिक्षु को समझने का एक महनीय उपक्रम है. तेरापंथ और भिक्षु एक दूसरे के पर्याय हैं. आचार्य भिक्षु निर्भीक संत थे. क्रांतिकारी महापुरुष थे।

इस अवसर पर तेरापंथ सभा अध्यक्ष सोहनलाल तातेड़, टी. पी. एफ. के नितेश सुराणा महिला मंडल अध्यक्षा विनीता सुराणा टी. पी. एफ. के अध्यक्ष प्रकाश भंसाली की उपस्थिति रही।

नवकार महामंत्र का सामूहिक संगान का आयोजन

जयपुर।

जीतो जयपुर चैप्टर द्वारा जयपुर में विराजित चारित्रात्माओं के सान्निध्य में अणुविभा जयपुर केन्द्र पर नवकार महामंत्र का संगान आयोजित किया गया।

कार्यक्रम में बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं ने सहभागिता कर मंत्रोच्चार के माध्यम से आध्यात्मिक वातावरण निर्मित किया।आयोजन की व्यवस्थाओं को सुव्यवस्थित बनाने में तेरापंथ युवक परिषद जयपुर की महत्वपूर्ण भूमिका रही। तेयुप जयपुर के अध्यक्ष रवि छाजेड़ के नेतृत्व में परिषद के कार्यकर्ताओं ने व्यवस्था संचालन एवं समन्वय कार्यों में सक्रिय योगदान देते हुए आयोजन को सफल बनाने में उल्लेखनीय सहभागिता अर्पित की।

कार्यक्रम के समापन पर उपस्थित जनसमूह ने विश्व कल्याण की भावना के साथ नवकार महामंत्र के प्रभाव से समाज में सकारात्मकता और सद्भाव बढ़ने की कामना की।

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स

संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र

समाचार प्रेषकों से निवेदन

1. संघीय समाचारों के साप्ताहिक मुखपत्र **'अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स'** में धर्मसंघ से संबंधित समाचारों का स्वागत है।
2. समाचार साफ, स्पष्ट और शुद्ध भाषा में टाइप किया हुआ अथवा सुपाठ्य लिखा होना चाहिए।
3. कृपया किसी भी न्यूज पेपर की कटिंग प्रेषित न करें।
4. समाचार मोबाइल नं. **8905995002 पर व्हाट्सअप्प** अथवा **abtyptt@gmail.com** पर ई-मेल के माध्यम से भेजें।

समाचार पत्र ऑनलाइन पढ़ने के लिए
नीचे दिए गए लिंक पर क्लिक करें।
https://terapanthtimes.org/

:: निवेदक ::

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद्

Think Different Workshop का हुआ भव्य आयोजन

विजयनगरम।

JITO व तेरापंथ युवक परिषद विजयनगरम के तत्वावधान में आयोजित त्रिदिवसीय Think Different Workshop का समापन मुनि जयेश कुमारजी के प्रेरक उद्बोधन के साथ हुआ। विशेष रूप से 13 से 45 वर्ष के युवाओं को केंद्र में रखकर आयोजित इस कार्यशाला में मुनिश्री ने सफलता के व्यावहारिक और आध्यात्मिक सूत्रों पर प्रकाश डाला। उपस्थित जनसमूह को संबोधित करते हुए मुनि जयेश कुमार जी ने कहा कि आज के इस तेज़ी से बदलते युग में व्यक्ति नई सोच के बिना आगे नहीं बढ़ सकता।

उन्होंने युवाओं में जोश भरते हुए कहा, 'मनुष्य का जन्म कुछ नया करने के लिए हुआ है, और नया करने के लिए पहले कुछ अलग सोचना (Think Different) जरूरी है।' उन्होंने स्पष्ट किया कि एक साधारण कार्य को भी असाधारण उत्कृष्टता तब मिलती है, जब उसे करने वाले की सोच में नयापन और गहराई हो।

उन्होंने कहा कि मनुष्य का जन्म केवल लकीर का फकीर बनने के लिए नहीं, बल्कि कुछ नया और मौलिक करने के लिए हुआ है। उन्होंने इस बात पर बल दिया कि किसी भी कार्य को असाधारण उत्कृष्टता प्रदान करने के लिए व्यक्ति की 'अलग सोच' ही सबसे महत्वपूर्ण उपकरण है। उन्होंने प्रतिभागियों को प्रेरित करते हुए कहा कि जब हम लीक से हटकर सोचते हैं, तभी एक सामान्य कार्य भी अद्वितीय बन जाता है। सफलता और सुख के अंतर्संबंधों पर प्रकाश डालते हुए मुनिश्री ने एक महत्वपूर्ण सूत्र दिया। उन्होंने कहा, 'यद्यपि छोटी-छोटी चीजें खुशियां देती हैं, लेकिन बिना कुछ बड़ा किए जीवन में महानता हासिल नहीं की जा सकती।' उन्होंने युवाओं को आगाह किया कि असाधारण सफलता की प्राप्ति के लिए अक्सर छोटी-छोटी क्षणिक खुशियों का बलिदान देना अनिवार्य होता है। इतिहास गवाह है कि हर महान व्यक्ति ने अपनी सुख-सुविधाओं का त्याग कर ही शिखर को छुआ है। इस कार्यशाला में 'Am I what I Think I Am?', 'Can I What I Think I Can?' और 'Will I be what I'm Meant to be?' जैसे विषयों के माध्यम से युवाओं की वैचारिक उलझनों का समाधान किया गया।

मुनिश्री ने अंत में आशा व्यक्त की कि यहाँ प्राप्त संबोध युवाओं के भीतर न केवल नई सोच का जागरण करेगा, बल्कि उनके भविष्य को एक स्पष्ट दिशा भी प्रदान करेगा। जीतो विजयनगरम की अध्यक्षा ज्योति बच्छावत ने मुनिश्री का आभार व्यक्त किया व इस सफल आयोजन की सराहना करते हुए आशा व्यक्त की कि यह कार्यशाला प्रतिभागियों के जीवन का एक महत्वपूर्ण 'टर्निंग पॉइंट' बनेगी।

तेरापंथ-मेरा पंथ कार्यशाला का भव्य आयोजन

हासन।

स्थानीय तेरापंथ भवन में युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी की सुशिष्या साध्वी पुण्ययशाजी ठाणा 4 के पावन सान्निध्य में पूज्य गुरुदेव के जन्मोत्सव व पट्टोत्सव कार्यक्रम के साथ ही तेरापंथ - मेरा पंथ कार्यशाला का सफल आयोजन किया गया।

साध्वी जी द्वारा नवकार महामंत्र के मंगलाचरण के पश्चात तेरापंथ सभा के द्वारा सभा गीत हमारे भाग्य बड़े बलवान का संगान किया गया, सभाध्यक्ष सोहनलाल तातेड़ द्वारा सभी का स्वागत किया गया। साध्वी पुण्ययशाजी ने कहा कि आचार्य श्री भिक्षु के सिद्धांतों को सही रूप से समझने की दिशा में इस तरह की ज्ञानवर्धक कार्यशालाओं के आयोजन को समय की जरूरत और परिणाम जनक बताया।

तेरापंथ धर्मसंघ के संस्थापक आचार्य श्री भिक्षु स्वामी की जन्म त्रिशताब्दी वर्ष के उपलक्ष में संस्था शिरोमणी तेरापंथ महासभा के निर्देशन में आयोजित कार्यशाला में स्वामीजी के सिद्धांतों को सही रूप में अपनाकर इस पथ को मेरा पंथ बनाया जा सकता है अध्यात्म को सम्यक रूप में समझ कर जीवन में अपनाना है तो इन सिद्धांतों को समझ कर उनके अनुसार चलना होगा।

साध्वी विनितयशाजी, साध्वी वर्धमानयशाजी एवं साध्वी बोधिप्रभाजी ने भी तेरापंथ का उद्भव, स्वामीजी की साधना तथा तेरापंथ की मर्यादाओं पर प्रकाश डाला ।

कार्यशाला में बैंगलोर से पधारे मुख्य प्रशिक्षक प्रवक्ता उपासक महेंद्रकुमार दक द्वारा विस्तृत रूप से दान,दया, धर्म, पुण्य, हृदय परिवर्तन, मूर्ति पूजा आदि विषयों पर भिक्षु स्वामी के सिद्धांतों की सम्यक् व्याख्या की गई एवं इस बारे में प्राप्त सभी की जिज्ञासा का समाधान किया गया। आभार ज्ञापन हासन सभा मंत्री विमल कोठारी द्वारा किया गया।

अक्षय तृतीया पर श्रद्धासिक्त विभिन्न कार्यक्रम

विल्लुपुरम

आचार्य श्री महाश्रमण जी के सुशिष्या साध्वी सौमयशाजी ठाणा-3 के सान्निध्य में अक्षय तृतीया कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत स्नेहा भंडारी के द्वारा मंगलाचरण से हुई। सभा अध्यक्ष प्रेमचंद सुराणा ने विभिन्न क्षेत्रों से पधारे श्रद्धालुगण एवं तपस्वी बहनों का स्वागत किया। साध्वी सोमयशाजी ने सभा को सम्बोधित करते हुए बताया कि भारतीय संस्कृति त्याग प्रधान है और अक्षय तृतीया की महत्वता को उजागर करते हुए भगवान ऋषभ के जीवन पर प्रकाश डाला। जीवन में सहिष्णुता के भाव को विकसित करने की प्रेरणा देते हुए बताया कि किस प्रकार धरती सबको अपने भीतर समता से समाती है, पानी निर्मलता से बहते हुए कोई छुआछूत न कर सबको समान रूप से प्राप्त होता है। उसी प्रकार मनुष्य के पास सबकुछ होते हुए भी धैर्य नहीं होता। हमें धरती एवं पानी की भांति धैर्यशील होना चाहिए। डॉ साध्वी सरल यशा जी ने जीवन के चार घटों के बारे में बहुत ही सुन्दर ढंग से बताया। ज्ञानशाला के बच्चों द्वारा भगवान ऋषभ के जीवन झांकी रोचक प्रस्तुति सराहनीय थी एवं सम्पूर्ण परिषद के मन को मोह गई। माधावरम से समागत् भाई देवीचंद मरलेचा ने गुरुकृपा एवं गुरु दृष्टि के चमत्कार का साक्षात दर्शन करवाया। कार्यक्रम का सफल संचालन साध्वी ऋषिप्रभाजी द्वारा किया गया ।

महरौली, नई दिल्ली

महाप्रज्ञ भवन में अक्षय तृतीया का पर्व अत्यंत हर्षोल्लास और आध्यात्मिक ऊर्जा के साथ मनाया गया। कार्यक्रम में बहुश्रुत परिषद के सदस्य एवं ज्ञानशाला के आध्यात्मिक पर्यवेक्षक मुनि उदित कुमार जी ने अक्षय तृतीया के महत्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि आज का दिन एक विशेष तप की परिसंपन्नता का दिन है, जो हमें धैर्य व सहिष्णुता की प्रेरणा देता है। प्रसंगवश, मुनिश्री ने आचार्य श्री महाश्रमण जी के दीक्षा प्रदाता श्रद्धेय मंत्री मुनिश्री सुमेरमल जी स्वामी की सातवीं पुण्यतिथि पर उनका स्मरण किया। उन्होंने बताया कि अक्षय तृतीया की यह पवित्र तिथि मंत्री मुनिश्री के देवलोकगमन की भी साक्षी है, और इस अवसर पर उन्होंने उनके प्रति अपना गहरा श्रद्धार्पण किया। कार्यक्रम में शासन मुनिश्री विमल कुमार जी एवं बहुश्रुत मुनि उदित कुमार जी , मुनि अभिजीत कुमार जी के विशेष सान्निध्य में 7 तपस्वी भाई-बहनों ने इक्षुरस बहराकर अपने वर्षीतप का पारणा किया। तेरापंथ सभा दिल्ली द्वारा सभी तपस्वियों का साहित्य आदि से सम्मान किया गया। सभा अध्यक्ष सुखराज सेठिया सहित अनेक तपस्वी परिवारों व श्रावकों ने अपनी मंगलकामनाएं व्यक्त कीं। कार्यक्रम का संचालन तेरापंथी सभा दिल्ली के उपाध्यक्ष बाबूलाल जी दुगड ने किया।

विजयनगरम, आंध्रप्रदेश

युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी के सुशिष्य मुनि मोहजीत कुमार जी के पावन सान्निध्य में स्थानीय तोषनीवाल भवन के प्रांगण में 'अक्षय तृतीया पारणोत्सव' मनाया गया। इस अवसर पर मुनि भव्य कुमार जी ने अपने चतुर्थ वर्षीतप का पारणा किया। साथ ही, उनके संयम जीवन के 25 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में उन पर आधारित म्यूजिक वीडियो ₹संयम का सफर ये सुहाना ₹ का विमोचन भी किया गया। इस अवसर पर मुनि मोहजीत कुमार जी ने भगवान ऋषभ के द्वारा विकास की परम्परा एवं वर्षीतप के महत्व पर प्रकाश डाला। मुनिश्री ने कहा जैन परम्परा में अक्षय तृतीया का आध्यात्मिक महत्व प्रथम तीर्थकर भगवान ऋषभ के 400 दिनों की तपस्या के बाद यह दिन पारणे के साथ जुड़ा हुआ है। ऋषभ के अन्तराय कर्म बंधन की मुक्ति प्रपोत्र श्रेयांस के हाथों इक्षु रस के दान से हुई। भगवान ऋषय इस काल खंड के प्रथम भिक्षु, याचक, केवली तीर्थंकर के रूप में प्रतिष्ठित हुए। मुनि भव्य कुमारजी के संयम जीवन के 25वें वसंत की पूर्णता और 25 वर्षों के साहचर्य की अनुभूति के संदर्भ में बोलते हुए मुनि मोहजीत कुमारजी ने कहा—₹मुनि भव्य कुमारजी ने सेवा और श्रम के साथ संत जीवन के प्रत्येक कार्य में दक्षता हासिल की है। इन्होंने ज्ञान, दर्शन, चारित्र और तप की वृद्धि के साथ-साथ अपनी मेधा का सक्रिय उपयोग किया है। इन्होंने प्रत्येक परिस्थिति में स्वयं को ढाला है तथा विवेकपूर्ण ढंग से संघ और संघपति की दृष्टि के अनुसार कार्य कर अपनी एक विशिष्ट पहचान बनाई है। इस अवसर पर मैं उनकी भावी संयम यात्रा के स्वर्णोत्सव के रूप में प्रवर्धमान होने की मंगलकामना करता हूँ। अपने चतुर्थ वर्षीतप की सम्पन्नता पर मुनि भव्य कुमार जी ने भगवान् ऋषभ -इक्षु -श्रेयांस से जुडी प्रेरणा एवं वर्षीतप व 25 वर्षीय संयम जीवन के अनुभव साझा किये। उन्होंने अपने परम उपकारी आचार्य महाप्रज्ञ जी, आचार्य श्री महाश्रमण जी,शासन श्री मुनि सुखलाल जी ,मुनि मोहजीत कुमार जी के प्रति कृतज्ञ स्वर प्रकट किए। मुनि जयेश कुमार जी ने भगवान आदिनाथ के महानतम व्यक्तित्व के कुछ महत्वपूर्ण बिंदुओ पर प्रकाश डालते हुए कहा तीर्थंकर ऋषभ पुरुषार्थ चतुष्टयी के पुरोधा थे। वे अपने युग के प्रथम प्रयोगधर्मा प्रवर थे। मुनि भव्य कुमार जी की वर्धापना करते हुए उन्होंने कहा कि मुनिश्री का दीक्षापूर्व नाम भारत था। भारत का अर्थ भरत द्वारा बसाया हुआ देश है। पर आचार्य महाप्रज्ञ ने उनका नाम भव्य कुमार कर उन्हें किसी की कृति नहीं स्वयं कृतिकार बनने का संदेश दिया ।सिर्फ भाग्यशाली नहीं स्वयं भाग्यविधाता बनने का बोध दिया ।आत्मा से भव्यात्मा व परमात्मा बनने का मार्ग प्रशस्त किया।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
हे प्रभो! यह तेरापंथ
04 मई - 10 मई 2026

आचार्यश्री महाप्रज्ञजी के 17वें महाप्रयाण दिवस पर विविध कार्यक्रम

गंगाशहर

आचार्य श्री महाश्रमणजी के आज्ञानुवर्ती मुनि अमृत कुमार जी के सान्निध्य में आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी के 17वें महाप्रयाण दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में मुनि अमृत कुमार जी ने अपने उद्बोधन में कहा कि गंगाशहर की पावन धरा पर बालक नथमल का भाग्योदय हुआ। पहली बार अपनी मातुश्री के साथ तेरापंथ के अष्टमाचार्य श्री कालुगणी के दर्शन करने गंगाशहर आया जहां मुनिश्री तुलसी (गुरुदेव श्री तुलसी) का भी दर्शन किया। आपने मात्र दस वर्ष की अल्प अवस्था में मातुश्री बालु जी के साथ पुज्यपाद कालुराम जी के कर कमलों से संयम रत्न को प्राप्त कर आठ दसकों तक संयम की सफल साधना की।आपने शिक्षा गुरु श्री तुलसी की पाठशाला में अल्पज्ञ से महाप्रज्ञ की यात्रा तय कर 21 सदी के महान् दार्शनिक कहलायें। आगे आपने कहा कि महाप्रज्ञ जी ने अनेकानेक अवदानों से मानव को उपकृत किया।

मुनि बीमलबिहारी ने अपने विचारों को व्यक्त किया। जैन श्री लुणकरण छाजेड़ ने तुलसी महाप्रज्ञ को एक बताते हुए कहा कि आपने जीवन की अद्भुत कसौटी पर खरे उतरते हुए गंगाशहर की तपोभूमि पर अपने उत्तराधिकारी का चयन किया।

तेरापंथ प्रोफेशनल से पूर्व महापौर नारायण चौपड़ा, युवक परिषद से रोहित बेद, महिला मण्डल से रुचि छाजेड़, आचार्य तुलसी शांति प्रतिष्ठान से धर्मेन्द्र डाकलिया, अणुव्रत समिति से मनोज छाजेड़ और चैनरुप छाजेड़ आदि व्यक्ताओं ने श्रद्धासुमन अर्पित किए। सफल संयोजन करते हुए मुनि उपशम कुमार जी ने कहा कि आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी ध्यान और स्वाध्याय के महान साधक थे।

टोहाना

श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा के तत्वावधान में स्थानीय तेरापंथ भवन में तेरापंथ के दशम अनुशास्ता आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी की 17वी पुण्यतिथि के अवसर पर श्रद्धा सुमन अर्पित किए गए। इस समारोह में कार्यक्रम का शुभारंभ ओमश्री महाप्रज्ञ गुरवे नमः जप अनुष्ठान से किया गया। इसके पश्चात सामूहिक रूप से आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी की अनुपम रचना 'चैत्य पुरुष जग जाये' का सामूहिक संगान किया गया। इसके पश्चात डॉक्टर गोपी ने आचार्य महाप्रज्ञ को विश्व के सबसे बड़े तथ महान संत की उपमा से उपमित कर उनका गुणगान व स्तवन किया। सुनीता जैन ने भावपूर्ण गीतिका के माध्यम से अपने उद्गार व्यक्त किये। सभा मंत्री सुभाष जैन ने कहा कि आचार्य महाप्रज्ञ जी 20वी शताब्दी के उत्तरार्द्ध के महासूर्य थे । उन्होंने तेरापंथ धर्म संघ ही नहीं अपितु सम्पूर्ण मानवता के कल्याण के लिए अतुल्यनीय एवं अनुपम कार्य किया। उन्होंने 2002 के गुजरात दंगों को शांत कराने में जो महत्वपूर्ण भूमिका निभाई वह उनके मानवतावादी तथा अहिंसा परमो धर्म दृष्टिकोण का अनुपम उदाहरण है।

अहमदाबाद पश्चिम

साध्वी अणिमाश्री जी एवं प्रोफेसर साध्वी मंगलप्रज्ञा जी के सान्निध्य में तेरापंथ सभा अहमदाबाद पश्चिम द्वारा आयोजित आचार्यश्री महाप्रज्ञ वार्षिक महाप्रयाण दिवस समारोह में उपस्थित धर्मपरिषद को सम्बोधित करते हुए साध्वी अणिमाश्री जी ने कहा - आचार्य श्री तुलसी और महाप्रज्ञ जी की जोड़ी विलक्षण थी। आचार्य तुलसी ने एक विलक्षण आचार्य संघ को दिया। परिवार और समाज के लिए महाप्रज्ञ जीवन आदर्श है, प्रेरणा है। घर परिवारों में यदि कुछ गुणों का प्रवेश हो जाए तो, शांति की स्थापना हो सकती है। चित्तवृत्ति सम और साध्वीश्री ने उनके जीवन-गुणों को व्यावहारिक करते हुए जीवन में अवतरित करने की प्रेरणा दी।

उन्होंने कहा - वीतराग तुल्य महाप्रज्ञ का जीवन सुदीर्घ जीवन धर्मशासना और जनोद्धार में व्यतीत हुआ। 59 वर्ष में युवाचार्य और 75 वर्ष की वय में आचार्य पद में क शाल करना भी एक ऐतिहासिक दस्तावेज है। इनके द्वारा प्रदत्त साहित्य-सम्पदा 'अनमोल विरासत है'। आवश्यकता है आवक-श्राविका समाज श्रेष्ठ रूप उनके साहित्य संसार की सैर कर अपने तन-मन को स्वस्थ बनाए और विशिष्ट संकल्पों के साथ नया उत्थान करे। सहजता और सरलता के पथ पर चरण-न्यास करे और कषाय चेतना को आवर्जित करने की साधना करे। इस अवसर पर प्रोफेसर साध्वी मंगलप्रज्ञा जी ने आचार्य श्री महाप्रज्ञ के कृतित्व, व्यक्तित्व और नेतृत्व को अद्वितीय बताते हुए कहा - समर्पण की चेतना के अनुपमेय उदाहरण हैं - आचार्य महाप्रज्ञ। मात्र तेरापंथ संघ ही नहीं देश-विदेशों में उनके प्रभावी 'प्रयोगों' की गूंज है। अनेक जीवन का हर पक्ष जनमानस के लिए - आलम्बन है, शक्ति सापेक्ष है। उनकी शरण और नजरों के जिसने आस्वाद लिए हैं, वह उन्हें कभी विस्मृत नहीं कर पाएगा। आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी करुणा के महा सागर थे। उनके शिखर व आरोहण की कहानी बड़ी बेजोड़ है। अष्टमाचार्य दीक्षा गुरु कालूगणी और विद्यागुरु आचार्य तुलसी के अनुशासन और संरक्षण में उनका जीवन विकास पथग्रिम रहा। वे समन्वय के पुरोधा थे। समदेणा, विनम्रता से वे विश्व प्रतिष्ठित बन गए। साध्वी मंगलप्रज्ञा जी ने महाप्रज्ञ श्रीचरणों में बैठकर उपासना के अनुभवों को साझा करते हुए कहा - मैं लगभग 26 साल तक उस महाशक्ति का नैकट्य उपासना और शिक्षा ग्रहण का सौभाग्य प्राप्त हुआ। अन्तिम सांस की साक्षी बनी। ऐसे दिव्यात्मा का महिमा मंडल हजारों-हजारों वर्षों तक जीवित रहेगा। पश्चिम तेरापंथ महिला मंडल ने मंगलसंगान किया। अहमदाबाद पश्चिम सभा मंत्री संजय पारख ने श्रद्धासिक्त विचार प्रस्तुत किए। साध्वी डॉ चैतन्य प्रभा जी ने कहा - कि आचार्य महाप्रज्ञ जी अप्रतिम व्यक्तित्व के धनी और विशिष्ट अवदान प्रदायक थे। साध्वी सुदर्शन प्रभा ने अपने श्रद्धा स्वर समर्पित करते हुए कहा - महामना आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी ने युग को अनेक कीर्तिमान स्वे गए। साध्वी मैत्री प्रभा जी ने आत्म स्वरों की अभिव्यक्ति में कहा - उनका जीवन हमें समर्पित भक्ति और गुरु के प्रति विशिष्ट अनुशक्ति की प्रेरणा देने वाला था। साध्वी समत्वयशा ने सुरीले स्वरों में श्रद्धा संगान कर वातावरण को सुरम्य बना दिया। साध्वी कणिकाश्री ने अभ्यर्थना प्रस्तुति करते हुए कहा - आचार्य श्री महाप्रज्ञ अनुपम व्यक्तित्व के धनी थे। जरूरत है करुणा और समत्व भाव के युग हमारे भीतर भी संप्राण हों। साध्वी डॉ शौर्य प्रभा जी ने कुशल मंच संचालन करते अपने संयोजकीय वक्तव्य में कहा - युगप्रधान आचार्य महाप्रज्ञ जी विकास पुरुष और श्रम के देवता थे।

हासन

परम पूज्य युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमणजी की सुशिष्या साध्वी श्री पुण्य जी के सन्निधि में आचार्य श्री महाप्रज्ञजी का 17 वा महाप्रयाण दिवस का आयोजन हासन में किया गया .कार्यक्रम का प्रारम्भ साध्वी श्री के द्वारा नमस्कार महामंत्र द्वारा किया गया. साध्वी श्री ने मंगल उद्बोधन में कहा किआचार्य महाप्रज्ञ एक क्रान्तिकारी, युगदृष्टा, असाधारण, विलक्षण आचार्य थे. तेरापंथ धर्मसंघ के विलक्षण आचार्य क्यों थे? क्योंकि वह अपने गुरु के हाथों से गुरु सन्निधि में आचार्य बने. आपके अवदान क्रान्तिकारी थे प्रेक्षाध्यान, जीवन विज्ञान आदि. यह अवदान समूचे विश्व को आलोकित करने वाले हैं. असाधारण व्यक्तित्व इसलिए था जब वह ढाई मास के हुए तब उनके पिता का स्वर्गवास हो गया. आचार्य श्री कई बार फरमाया करते थे वह सीन आज भी मेरी आंखों के सामने है. आपने अपने जीवन में 'भिक्षु म्हारे प' आदि गीत कभी याद नहीं किए जब आप छोटे थे आपकी माता श्री आपकी लोरी में एक गीत सुनाती जिससे यह गीत आपको याद हो गये। आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी का जीवन कीर्तिमानों का कीर्तिमान था। साध्वी बोधिप्रभाजी ने अपने भावों की प्रस्तुति दी। साध्वी वर्धमान यशजी ने सुमधुर गीत का संगान किया. मंगलाचरण युवति मंडल के द्वारा किया गया। महिला मंडल की अध्यक्षा विनीता तातेड़ ने आचार्य श्री महाप्रज्ञ के जीवन पर प्रकाश डाला उसके तत्पश्चात महिला मंडल के साथ गीतिका प्रस्तुत की. तेरापंथ युवक परिषद के अध्यक्ष नितेश सुराणा के साथ युवक परिषद ने भी गीतिका प्रस्तुत की. मल्लाड सभा के अध्यक्ष महावीर भंसाली, तेरापंथ सभा के अध्यक्ष सोहनलाल तातेड़, एवं साध्वी बोधिप्रभा जी के संसार पक्षीय बढ़ियासा कान्तादेवी गोलछा ने अपने भावों की प्रस्तुति दी।

जसोल

आचार्य श्री महाश्रमण जी की सुशिष्या साध्वी सत्यप्रभा जी के सान्निध्य में तेरापंथ के दशम अधिशास्ता आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी की 17 वीं पुण्यतिथि का आयोजन स्थानीय पुराणा ओसवाल भवन जसोल में किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत तेरापंथ महिला मंडल ने महाप्रज्ञ अष्टकम से की। शासनश्री साध्वी सत्यप्रभाजी ने अपने प्रेरक उद्बोधन में कहा कि आचार्य महाप्रज्ञ प्रतिभा के अलौकिक अवतार थे। प्रज्ञा के महासूर्य थे। आपकी प्रज्ञा प्रकाश में अज्ञान तीमस्रा का नाश हुआ। आपके हर वाक्य संतप्त मानव जाति को शांति का निर्जर प्रदान किया। जैन आगमो के कुशल भाग्यकार एवं व्याख्याकार थे। साध्वी ध्यानप्रभा जी, साध्वी श्री श्रुतप्रभा जी ने आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी के कुशल कृतत्व व्यक्तित्त्व को उजागार किया। तेरापंथ सभा अध्यक्ष भूपतराज कोठारी, ज्ञानशाला प्रभारी डूंगरचंद सालेचा, महासभा संभाग प्रभारी गौतमचन्द सालेचा आदि प्रबुद्ध नागरिको ने आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी के प्रति भावांजलि व्यक्त की। तेरापंथ महिला मंडल व तेरापंथ कन्या मंडल ने सामूहिक गीत की प्रस्तुति दी। साथ ही ज्ञानशाला के नन्हे मुन्हे बच्चों द्वारा शानदार सुंदर नाटक की प्रस्तुति दी गई। कार्यक्रम का सफल संचालन संपतराज चौपड़ा व कान्तिलाल ढ़ेलडिया ने किया।

बालोतरा

तेरापंथ भवन के आध्यात्मिक प्रांगण में दशम आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी का 17वा महाप्राण दिवस उपासक कमलजी कुहाड़ एवं प्रेक्षा ध्यान प्रवक्ता ममताजी गोलेछा के द्वारा मनाया। राजेश बाफना ने बताया तेरापंथ के दशम आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी का 17वाँ महाप्राण दिवस कार्यक्रम का प्रारंभ नमस्कार महामंत्र से किया। उपासक कमलजी कुहाड़ ने कहा आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी एक दार्शनिक महापुरुष हुए उनका जीवन सरल विनम्र ओर सद्गुणों से भरा था छोटी उम्र में तेरापंथ के अष्टम आचार्य श्री कालुगणि के पास दीक्षित हुए ओर मुनि नथमल बने शिक्षा मुनि तुलसी के पास ग्रहण की। कुछ समय बाद नवम आचार्य श्री तुलसी के साथ रहकर अपने चारित्र संयम जीवन को उतरोतर आगे बढाया। आचार्य श्री तुलसीगणी ने कहा मुनि नथमलजी दो कार्य पर ध्यान देना। जीवन उपयोगी 'आध्यात्मिक ज्ञान साहित्य लेखन कार्य, एवं अच्छा व स्वास्थ जीवन जीने के प्रयोग जो स्वयं के लिए व जन मानस उपयोगी बने वैसा कार्य करे। तब आपने प्रेक्षा ध्यान कायोत्सर्ग योग का विशेष प्रयोग कर स्वयं आत्मा से साक्षात्कार किया।

विलेपार्ले, मुंबई

आचार्य श्री महाश्रमणजी की विदुषी सुशिष्या साध्वी राकेशकुमारीजी आदि ठाणा 4 के पावन सानिध्य में विलेपार्ले गोंयल भवन में तेयुप के तत्वावधान में आचार्य श्री महाप्रज्ञजी का 17 वां महाप्रयाण दिवस मनाया गया। तेरापंथ महिला मंडल के मंगलाचरण से कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। साध्वी राकेश कुमारीजी ने प्रेक्षाप्रणेता आचार्यजी महाप्रज्ञजी को श्रद्धासुमन अर्घ्य चढ़ाते हुए सामूहिक गीत प्रस्तुत करते हुए कहा- अतीन्दिय ज्ञान के धनी युगप्रधान आचार्य श्री महाप्रज्ञजी की यशोमय यशकीर्ती गौरव गाथा सौरभ विश्व को सुरभित करती रहेगी। सदिया-२ यशकीर्ती की पताकाए फहराती रहेगी और यशोगाथाएं ब्रह्माण्ड में अनुगुंजित होती रहेगी। आप एक सिद्ध पुरुष थे। अपने उदात्त व्यक्तित्व, यशस्वी कर्तृत्व तथा साधना की तेजस्विता की स्याही विश्व के भाल पर जो आलेख लिखे उन पर समग्र विश्व को गौरव व गर्व की अनुभूति होती है और ज्ञान की रश्मीया से सम्पूर्ण विश्व लाभान्वित हो रहा है।

अपराधी कैदियों के लिए प्रेक्षा ध्यान और योग सत्र पुनः आरम्भ

नई दिल्ली।

छतरपुर स्थित अध्यात्म साधना केंद्र ने तिहाड़ जेल, दिल्ली में नाबालिग और नए युवा अपराधियों के मानसिक स्वास्थ्य, तनाव और व्यवहार पर प्रेक्षा ध्यान और योग के प्रभाव का 359 दिन (लगभग एक वर्ष) का विस्तृत अध्ययन शुरू किया।

यह पहल कैदियों में मानसिक संतुलन, भावनात्मक लचीलापन और सकारात्मक व्यवहार परिवर्तन को बढ़ावा देने के उद्देश्य से की गई थी। इस कार्यक्रम के दौरान विशेषज्ञ प्रशिक्षक नियमित रूप से कैदियों से संपर्क में रहते हुए योग, प्राणायाम और प्रेक्षा ध्यान के सम्मिलित सत्र संचालित करते रहे। साथ ही, कैदियों पर नियमित अंतराल पर मनोवैज्ञानिक परीक्षण किए गए, ताकि उनके मानसिक स्थिति, तनाव स्तर और भावनात्मक लचीलापन का व्यवस्थित मूल्यांकन किया जा सके।

800 से भी अधिक कैदियों पर की गई शोध के परिणाम अत्यंत उत्साहवर्धक रहे और आंकड़े शोधकर्ताओं की प्रारंभिक अपेक्षाओं से भी अधिक सकारात्मक पाए गए। अध्ययन ने स्पष्ट किया कि प्रेक्षा ध्यान और योग का सम्मिलित अभ्यास कैदियों की चिंता, तनाव और आक्रामक प्रवृत्तियों को कम करने में मदद करता है, साथ ही उनके मानसिक संतुलन और आत्म-जागरूकता को भी बढ़ाता है। प्रेक्षा ध्यान, जैन परंपरा पर आधारित एक प्राचीन ध्यान तकनीक, मानसिक स्पष्टता, आत्मनिरीक्षण और भावनात्मक संतुलन विकसित करने में सहायक है। इस पद्धति में कैदी अपने शरीर, श्वास और भावनाओं का सूक्ष्म निरीक्षण करते हैं, जिससे तनाव कम होता है और आत्म-जागरूकता बढ़ती है। केंद्र के प्रशिक्षक दैनिक 90 मिनट के सत्रों में योग, प्राणायाम और प्रेक्षा ध्यान का संयोजन करते हैं।

पृष्ठ 1 का शेष

प्रमाद और कषाय से...

आचार्यश्री का मार्मिक प्रतिबोध : 'जन्म क्यों होता है?' अपने 65वें जन्मोत्सव पर चतुर्विध धर्मसंघ को पावन प्रतिबोध प्रदान करते हुए महातपस्वी आचार्यश्री ने 'जन्म और कर्म' के गूढ़ रहस्यों को अत्यंत सरल भाषा में समझाया। आचार्यश्री ने फरमायाः 'आगमों के अनुसार, प्रमाद और हमारे भीतर विद्यमान कषाय—क्रोध, मान, माया, लोभ—ही पुनर्जन्म के मूल कारणों को सींचते हैं।

जन्म-मृत्यु का यह चक्र दुख का कारण है, लेकिन मानव जन्म मिलना एक महान अवसर है। बिना मानव देह पाए इस चक्र से मुक्ति संभव नहीं है। जन्म लेना पूर्व कर्मों का फल (भाग्य) हो सकता है, लेकिन इस जीवन में 'सत्पुरुषार्थ' करना पूरी तरह हमारे अपने हाथ में है।'

शासन माता का भावपूर्ण स्मरण : आचार्यश्री ने अपनी देशना के दौरान शासन माता साध्वी प्रमुखा श्री कनक प्रभा जी का विशेष रूप से स्मरण किया। उन्होंने भावुक होते हुए कहा कि लाडनूं में इस 'योगक्षेम वर्ष' का आयोजन उन्हीं के विशेष निवेदन पर स्वीकार किया गया था। यह आयोजन उनके संकल्पों की सिद्धि और संघ की अटूट एकता का प्रतीक है।

गणमान्य जनों ने दी विनयांजलि : कार्यक्रम में जैन विश्व भारती के मुख्य न्यासी जयन्तीलाल सुराणा, कुलपति बच्छराज दूगड़, अमृत वाणी के अध्यक्ष ललित कुमार दूगड़ सहित प्रमोद बैद (अध्यक्ष, प्रवास व्यवस्था समिति) और विभिन्न क्षेत्रों से आए पदाधिकारियों ने अपनी विनयांजलि अर्पित की। कार्यक्रम के अंत तक सुधर्मा सभा में श्रद्धालुओं की उपस्थिति गुरु-भक्ति के अनुपम दृश्य को दर्शा रही थी।

क्रोध और अहंकार है...

आवेश में आना कमजोरी है; शांत रहकर अपनी बात कहना ही सच्ची साधना है।

२.अहंकार का त्यागः

मान पतन का कारण है। विनम्रता, सादगी और व्यवहार में मधुरता अपनाकर ही अहंकार से मुक्ति संभव है।

३.लोभ का भयः लोभी व्यक्ति इस लोक और परलोक दोनों जगह भय से घिरा रहता है। आचार्य श्री ने सार रूप में फरमाया कि कषाय आत्मा के पतन का आधार हैं, अतः साधक को इनसे निरंतर बचने का पुरुषार्थ करना चाहिए।

श्रद्धा और अभिव्यक्ति का संगमः

कार्यक्रम का शुभारंभ आचार्य श्री के मंगल महामंत्रोच्चार और साध्वी वृंद के 'प्रज्ञा गीत' से हुआ। दो दिवसीय विशेष कार्यक्रम के समापन अवसर पर साधु-साध्वियों के वर्धापना का क्रम जारी रहा।

अभिव्यक्ति एवं वर्धापनाः साध्वी लब्धि श्री जी, साध्वी संघ प्रभा जी, साध्वी गुप्ति प्रभा जी, समणी निर्मल प्रज्ञा जी, मुनि सुमति कुमार जी, साध्वी पंकज श्री जी, साध्वी रचना श्री जी, साध्वी काव्यलता जी, समणी चैतन्य प्रज्ञा जी, मुनि अर्हत् कुमार जी, साध्वी गवेषणा श्री जी, साध्वी हिम श्री जी, समणी मंजू प्रज्ञा जी, मुनि जेबू कुमार जी (सरदारशहर), साध्वी शुभ्रयशा जी, साध्वी मंगल यशा जी, साध्वी शुभ प्रभा जी, मुनि पारस कुमार जी, साध्वी कार्तिक यशा जी, साध्वी ऋद्धिप्रभा जी, मुनि पृथ्वीराज जी, मुनि श्रेयांस कुमार जी, साध्वी मंदार प्रभा जी, साध्वी शताब्दी प्रभा जी और साध्वी विज्ञ प्रभा जी।

> बिना गुस्से के बात कहना ही श्रेष्ठ साधना
> – आचार्य प्रवर

गीत संगानः साध्वी रति प्रभा जी एवं साथी साध्वियों ने, तथा साध्वी शांतिलता जी, साध्वी पूनम प्रभा जी और साध्वी श्रेष्ठ प्रभा जी ने सुमधुर गीतों की प्रस्तुति दी।

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल की राष्ट्रीय अध्यक्ष सुमन नाहटा ने भी इस अवसर पर अपने विचार व्यक्त किए।

अंत में आचार्य श्री ने उपस्थित श्रावक समाज को अपनी पावन देशना से लाभान्वित किया।

बोलती किताब

भक्तामर-अन्तस्तल का स्पर्श

भक्ति, आत्मानुभूति और आध्यात्मिक जागरण का स्पंदन

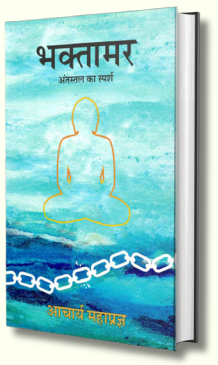

पूज्य आचार्यश्री महाश्रमण जी की प्रेरणादायी वाणी से संकलित पुस्तक "भक्तामर अन्तस्तल का स्पर्श" भक्तामर स्तोत्र की आध्यात्मिक गहराइयों को सरल और अनुभूतिपूर्ण शैली में प्रस्तुत करने वाली एक प्रेरक कृति है। जैन विश्व भारती द्वारा प्रकाशित यह पुस्तक भक्तामर के पदों में निहित आध्यात्मिक संदेशों को समझने का सुंदर माध्यम प्रदान करती है। इसमें स्तोत्र के माध्यम से भक्ति, श्रद्धा और आत्मजागरण के भावों को सहज भाषा में अभिव्यक्त किया गया है।

इस कृति में भक्तामर स्तोत्र की भावभूमि को केवल दार्शनिक दृष्टि से ही नहीं, बल्कि साधना और आंतरिक अनुभव के स्तर पर भी समझाने का प्रयास किया गया है। पुस्तक यह बताती है कि भक्ति केवल शब्दों का उच्चारण नहीं, बल्कि हृदय की गहराइयों से उत्पन्न होने वाली वह अनुभूति है जो मनुष्य को भीतर से रूपांतरित कर देती है। जब साधक श्रद्धा और समर्पण के साथ इन भावों को आत्मसात करता है, तब उसके जीवन में शांति, सकारात्मकता और आध्यात्मिक जागृति का संचार होता है।

यह कृति पाठक को भक्तामर के पदों के माध्यम से आत्मचिंतन और अंतर्मन के स्पर्श की प्रेरणा देती है। इसमें निहित विचार मनुष्य को यह अनुभव कराते हैं कि सच्ची भक्ति केवल बाह्य आचरण तक सीमित नहीं होती, ब वह आत्मा के गहन स्तर पर होने वाली एक पवित्र अनुभूति है। जब व्यक्ति श्रद्धा, विनय और साधना के साथ इस भाव को अपने जीवन में उतारता है, तब उसका मन निर्मल होता है और जीवन में एक नई आध्यात्मिक दिशा का उदय होता है।

भक्तामर स्तोत्र भारतीय आध्यात्मिक परंपरा की एक अनुपम धरोहर है, जिसमें श्रद्धा, विनय और आत्मसमर्पण के गहन भाव प्रकट होते हैं। जब साधक इन भावों के साथ भक्तामर का चिंतन करता है, तो उसके अंतर्मन में शांति, आत्मविश्वास और सकारात्मक ऊर्जा का संचार होता है। यही आध्यात्मिक अनुभूति मनुष्य के अंतस्तल को स्पर्श कर उसे आत्मिक उन्नति की दिशा में अग्रसर करती है।

इस पुस्तक को ऑनलाइन पढ़ने के लिए
अभी डाउनलोड करें
सम्बोधि ई-लाइब्रेरी ऐप्प
Sambodhi E-Library
SCAN HERE
Readable & Audible Mobile Application

पुस्तक प्राप्त करने हेतु सम्पर्क करें
आदर्श साहित्य विभाग,
जैन विश्व भारती लाडनूं
+91 87420 04849
books.jvbharati.org
books@jvbharati.org

वर्षीतप अनुमोदना का भव्य कार्यक्रम

सिकंदराबाद।

महिला मंडल की बहनों ने मंगलाचरण प्रस्तुत कर वातावरण को भक्तिमय बना दिया। स्वागत भाषण में महिला मंडल अध्यक्ष नमिता ने तपस्वियों की अनुमोदना करते हुए उनके भावी जीवन हेतु मंगलकामनाएं प्रेषित कीं। नगर क्षेत्र में वर्षीतप करने वाले तपस्वियों—शर्मिला बैद, सुशीला दुगड़, विमला देवी गोलछा, मधु कोठारी एवं महेंद्र लुणावत—को सभी उपस्थितजनों ने अनुमोदना एवं शुभकामनाएं प्रदान कीं। आईडीपीएल की महिलाओं द्वारा भी तपस्वियों की अनुमोदना की गई। मंत्री निशा एवं सह-मंत्री संगीता जी गोलछा ने अपनी सुंदर प्रस्तुति के माध्यम से भगवान ऋषभदेव के वर्षीतप की प्रेरणादायक कथा का भावपूर्ण वर्णन किया। इस अवसर पर तुलसी महाप्रज्ञ वेलफेयर ट्रस्ट के अध्यक्ष महेंद्र द्वारा सभी आगंतुक श्रावक-श्राविकाओं एवं तपस्वियों का स्वागत किया गया। सोल, माला के द्वारा तपस्वियों का विशेष सम्मान किया गया। श्रवण कोठारी, सभा अध्यक्ष सुशील संचेती, अशोक मेडतवाल सहित अन्य गणमान्य व्यक्तियों ने उद्बोधन में तप की महिमा का वर्णन करते हुए तपस्वियों की सराहना की। अंत में सभा मंत्री हेमंत जी ने आभार ज्ञापन प्रस्तुत किया।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
हे प्रभो! यह तेरापंथ
04 मई - 10 मई 2026

क्रोध पर क्षमा और अहंकार पर विनम्रता से मिलेगी सच्ची जीत

लाखों शत्रुओं पर जीत से बड़ी है 'आत्म-विजय' : आचार्यश्री महाश्रमण

लाडनूं।
22 अप्रैल, 2026

> अहिंसा यात्रा प्रणेता का संदेश : विवाद नहीं संवाद करें, स्वाद नहीं संयम चुनें।
> -आचार्यश्री महाश्रमण

जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशमाधिशास्ता एवं अहिंसा यात्रा के प्रणेता महातपस्वी आचार्य श्री महाश्रमणजी ने आज 'युद्ध करें: विजय वरें' विषय पर मार्मिक उद्बोधन प्रदान किया। आचार्य प्रवर ने स्पष्ट किया कि संसार में दूसरों को हराना सरल है, किंतु स्वयं की बुराइयों पर विजय पाना ही वास्तव में 'परम विजय' है।

आचार्य श्री ने 'उत्तरज्झयणाणि आगम' के माध्यम से फरमाया कि संसार में असली योद्धा वह नहीं है जो युद्ध के मैदान में लाखों शत्रुओं को जीतता है, बल्कि असली विजेता वह है जो स्वयं को जीत लेता है।

1. परम विजय क्या है? दुनियावी जीत (दूसरों को हराना) अस्थायी है। एक साधक जब अपनी आत्मा को जीत लेता है, तो उसे 'परम जय' कहा जाता है। इसे ही सच्चा 'धर्मयुद्ध' या 'आत्म-युद्ध' माना गया है।

2. आत्मा के साथ युद्ध कैसे करें? यह युद्ध हथियारों से नहीं, बल्कि प्रवृत्तियों के बदलाव से लड़ा जाता है: अशुभ योग बनाम शुभ योग: गलत कार्यों और विचारों (अशुभ योग) को रोकने के लिए अच्छे कार्यों (शुभ योग) का सहारा लें। मिथ्या दर्शन बनाम सम्यक् दर्शन: गलत धारणाओं को हटाकर सही दृष्टि और सत्य को अपनाने का प्रयास करें।

3. कषायों (विकारों) पर विजय के सूत्र (प्रतिपक्ष भावना): आचार्य प्रवर ने चार मुख्य विकारों को जीतने के लिए उनके विपरीत गुणों को अपनाने की प्रेरणा दी।

क्रोध (गुस्सा) : इसे क्षमा के द्वारा जीतें। प्रतिकूल स्थिति में भी मन, वचन और शरीर से शांत रहें।

मान (अहंकार) : इसे मार्दव (विनम्रता) से जीतें।

माया (छल-कपट) : इसे आर्जव (सरलता) से जीतें। कथनी और करनी में अंतर न रखें।

लोभ (लालच) : इसे संतोष के द्वारा जीतें। दूसरों की सहायता करने और दान देने से संतोष बढ़ता है।

4. इंद्रिय संयम : आत्मा को जीतने के लिए पांचों इंद्रियों (कान, आंख, नाक, जीभ, स्पर्श) पर नियंत्रण अनिवार्य है:

कान (श्रोतेन्द्रिय) : अनुपयोगी बातें न सुनें। केवल भगवत् वाणी और साधना की बातें सुनें और राग-द्वेष से बचें।

जीभ (रसेन्द्रिय): स्वाद के पीछे न भागें। 'विवाद' के बजाय 'संवाद' पर जोर दें।

आंखें : देखने की शक्ति का संयम रखें और केवल शुभ का दर्शन करें।

मंगल प्रवचन के पश्चात आचार्य श्री ने उपस्थित चारित्रात्माओं की विविध जिज्ञासाओं का समाधान भी किया, जिससे उपस्थित श्रावक समाज लाभान्वित हुआ।

इच्छाएं अनंत, संतोष ही परम सुख का मार्ग : आचार्यश्री महाश्रमण

लाडनूं में मुमुक्षु चंदन ने अंगीकार किया संयम पथ, बनीं 'साध्वी चंदन प्रभा'

लाडनूं।
23 अप्रैल, 2026

> इच्छाओं का अंत ही सुख की शुरुआत है
> -आचार्यश्री महाश्रमण

जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशमाधिशास्ता, युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी की पावन सन्निधि में आज जैन विश्व भारती के सुरम्य परिसर में वैराग्य का अनूठा दृश्य देखने को मिला। हज़ारों की संख्या में उपस्थित जन समूह के साक्षी में 'मुमुक्षु चंदन' ने सांसारिक मोह-माया का त्याग कर संयम के मार्ग पर कदम बढ़ाए। आचार्य प्रवर ने विधिवत मंत्रोच्चार के साथ उन्हें साध्वी दीक्षा प्रदान की। योगक्षेम वर्ष के दौरान लाडनूं प्रवास का यह तीसरा दीक्षा समारोह था।

इच्छाओं की अनन्तता पर पावन देशना:

दीक्षा समारोह के अवसर पर आचार्य श्री ने 'इच्छा की अनन्तता' विषय पर गंभीर बोध दिया। पूज्य प्रवर ने फरमाया कि, 'जैसे आकाश का कोई आदि या अंत नहीं है, वह अनन्त है, वैसे ही मनुष्य की इच्छाएं भी अनन्त हैं। मोहग्रस्त व्यक्ति सदैव असंतोष में जीता है, जबकि ज्ञानी और साधु संतोष को धारण कर परम सुख प्राप्त करते हैं।' आचार्य प्रवर ने शास्त्रों का संदर्भ देते हुए फरमाया कि अध्ययन, जप और दान में कभी संतोष नहीं करना चाहिए, लेकिन भोजन, धन और स्वयं की स्थिति में संतोष अनिवार्य है। उन्होंने भौतिक वस्तुओं के संग्रह से बचने और अपनी संपत्ति पर स्वामित्व की सीमा तय करने (परिग्रह परिमाण) की प्रेरणा दी।

चारित्र ही सर्वश्रेष्ठ रत्न : साध्वी प्रमुखा श्री जी :

साध्वी प्रमुखा श्री विश्रुत विभा जी ने अपने उद्बोधन में चारित्र (संयम) की महिमा का बखान किया। उन्होंने कहा कि संसार में चारित्र रत्न से श्रेष्ठ कोई दूसरा रत्न नहीं है और न ही इससे बड़ा कोई सुख है। जब व्यक्ति सांसारिक भोगों को तुच्छ समझने लगता है, तभी वह आत्म-विकास के इस कठिन मार्ग पर अग्रसर होता है।

दीक्षा विधि और नया नामकरण :

दीक्षा की प्रक्रिया के दौरान मुमुक्षु चंदन के पिता ने गुरुदेव के चरणों में 'आज्ञा पत्र' समर्पित किया। मुमुक्षु चंदन ने वैराग्यपूर्ण भावों के साथ अपनी अभिव्यक्ति दी। आचार्य श्री ने परिवारजनों से अंतिम अनुमति लेने के बाद आर्षवाणी के साथ मुमुक्षु को दीक्षित किया। आचार्य श्री की आज्ञा से साध्वी प्रमुखा जी ने नवदीक्षित साध्वी को रजोहरण प्रदान किया और केशलुंचन की विधि संपन्न की। मुमुक्षु चंदन को संयम जीवन का नया नाम 'साध्वी चंदन प्रभा' प्रदान किया गया। इसके साथ ही मुमुक्षु अर्चना को साध्वी प्रतिक्रमण सीखने की अनुमति भी प्रदान की गई।

आचार्य भिक्षु : जीवन दर्शन

शासक कम : गुरु अधिक

नियंत्रण और हृदय परिवर्तन– ये एक नहीं हैं। नियंत्रण में प्रवृत्ति का निषेध होता है और हृदय-परिवर्तन में अन्तर्भाव का जागरण। नियंत्रण शासकत्व का प्रतीक है और हृदय-परिवर्तन गुरुत्व का।

आचार्य भिक्षु धर्म शासन के शासक थे। धर्म शासन में भी नियंत्रण वर्जित नहीं होता, अपनी सीमा में अपेक्षित होता है। पर केवल नियंत्रण अपेक्षित नहीं होता, अपेक्षित होता है अन्तर्भाव का परिवर्तन, गुरुत्व का विकास।

आचार्य भिक्षु शासक और गुरु– दोनों थे। भारमलजी स्वामी नव युवा थे। आचार्य भिक्षु ने निर्देश दिया– तुम खड़े-खड़े समूचे उत्तराध्ययन सूत्र (लगभग २ हजार श्लोक) की पुनरावृत्ति किया करो।

भारमलजी स्वामी बोले– गुरुदेव ! मुझे खड़े-खड़े नींद आ जाये और गिर पड़ू तो?

आचार्य भिक्षु– प्रमार्जन कर कौने में खड़े हो जाओ, पर पुनरावृत्ति खड़े-खड़े ही करनी है।

मुनि भारमलजी प्रतिलिपि किया करते थे। उस समय 'बरू' की कलम से प्रतिलिपियां की जाती थी। मुनि भारमलजी कलम बनाना नहीं जानते थे। वे दूसरे साधुओं से कलम बनवाते थे। एक बार आचार्य भिक्षु ने कहा– तुम्हें दूसरों से कलम बनवाने का त्याग है। अब वे कलम बनाना स्वयं सीख गये।

मुनि हेमराजजी ने दशवैकालिक सूत्र कण्ठस्थ कर उत्तराध्ययन सूत्र कण्ठस्थ करना चाहा। तब आचार्य भिक्षु बोले– तुम्हारा कण्ठ अच्छा है इसलिए तुम व्याख्यान कण्ठस्थ करो। जनता का कल्याण व्याख्यान से ज्यादा होगा।

मुनि हेमराजजी प्रतिलिपि किया करते थे। एक बार उन्होंने अपना लिखा हुआ पन्ना आचार्य भिक्षु को दिखाया। उसकी टेढ़ी-मेढ़ी रेखाएं देखकर आचार्य भिक्षु बोले– किसान हल चलाता है। वह भी सीधा चलाता है। तुम्हारी रेखाएं कितनी टेढ़ी-मेढ़ी हैं। रेखाएं सीधी खींचा करो।

आचार्य भिक्षु की वाणी ने उनमें सीधी रेखाओं का कौशल जगा दिया।

गुरु कौशल की ज्योति पर राख का भार नहीं डालता किन्तु दबी हुई ज्योति को प्रकट कर देता है। उनकी एक वाणी अनेक सुषुप्त क्षमताओं को जगा देती है।

भिक्षु की कहानी जयाचार्य की जुबानी

सामायिक की सुरक्षा

कोई कहता है– 'सामायिक में शरीर का प्रमार्जन कर खुजलाना धर्म है और शरीर का प्रमार्जन किए बिना उसे खुजलाता है तो उसे पाप लगता है।'

तब स्वामीजी बोले– 'चींटी और मच्छर सामायिक में काट खाए तो शरीर को काटा या सामायिक को।'

तब वह बोला– 'शरीर को काटा।'

तब स्वामीजी बोले– 'शरीर का प्रमार्जन करके खुजलाता है तो वह सुरक्षा सामायिक की करता है, या शरीर की?'

तब वह विपरीत मान्यता के आधार पर बोला– 'सुरक्षा सामायिक की करता है।'

तब स्वामीजी बोले– 'वह नहीं खुजलाता तो सामायिक की सुरक्षा तो और ज्यादा होती। जो बिना प्रमार्जन किए खुजलाने का त्याग है। सामायिक में प्रमार्जन किए बिना शरीर को नहीं खुजला सकता। यदि शरीर को न खुजलाता, मच्छर आदि के काटने को सहन करता तो निर्जरा अधिक होती। उससे सामायिक और अधिक पुष्ट होता। इस दृष्टि से जो शरीर का प्रमार्जन करता है, वह सामायिक की सुरक्षा के लिए नहीं करता। मच्छर ने शरीर को काटा, सामायिक को नहीं काटा, ये तो वे भी कहते हैं। शरीर की सुरक्षा के लिए उसका प्रमार्जन करते हैं और उसे खुजलाते हैं, किन्तु सामायिक की सुरक्षा के लिए प्रमार्जन नहीं करते। ढाई द्वीप (मनुष्य-क्षेत्र) के बाहर समुद्रों में रहने वाले तिर्यंच श्रावक सामायिक और पौषध व्रत का अभ्यास करते हैं, वे कौन-सी प्रमार्जनी रखते हैं? सामायिक की सुरक्षा वे भी बहुत सावधानी से करते हैं। अयतना (असंयम) न करना ही सामायिक की सुरक्षा है।

जानें तेरापंथ को-पहचाने स्वयं को

39 श्रावकों की 11 प्रतिमा

3. सामायिक प्रतिमा : समय सीमा– तीन मास।
   विधि– सामायिक तथा देशावकाशिक व्रत धारण करना।
4. पौषध प्रतिमा : समयसीमा– चार मास।
   विधि– अष्टमी, चतुर्दशी, अमावस्या और पूर्णमासी को प्रतिपूर्ण पौषध व्रत का पालन करना।
5. कार्यात्सर्ग प्रतिमा : समय सीमा– पांच मास।
   विधि– रात्रि को कार्यात्सर्ग करना। कार्यात्सर्ग प्रतिमा का धारक–
   1. स्नान नहीं करता।
   2. रात्रि भोजन नहीं करता।
   3. धोती के लांग नहीं देता।
   4. दिन में ब्रह्मचार्य रहता है।
   5. रात्रि में मैथुन का परिमाण करता है।

संदर्भ पुस्तकें : आचार्य भिक्षु जीवन दर्शन, भिक्खु दृष्टांत, श्रावक संदेशिका

क्या आप जानते हैं?

तले हुए खाखरे आदि पर यदि सचित्त नमक लगाया जाए, भले मिर्च के साथ लगाया जाए, उसे सचित्त माना जाए।

साप्ताहिक प्रेरणा

''ॐ श्री महाश्रमण गुरुवे नमः''
की एक माला फेरें।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
हे प्रभो! यह तेरापंथ
04 मई - 10 मई 2026

शासनमाता स्मृति स्थल 'वात्सल्य पीठ' का भव्य उद्घाटन

साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा का वात्सल्य, साधना और समर्पण प्रेरणा का संगम है

नई दिल्ली।

शासनमाता, असाधारण साध्वीप्रमुखा कनकप्रभाजी के समाधि स्थल पर निर्मित 'वात्सल्य पीठ' का भव्य उद्घाटन समारोह श्रद्धा, गरिमा और आध्यात्मिक उल्लास के साथ संपन्न हुआ। इस अवसर पर शासनश्री मुनि विमलकुमारजी, बहुश्रुत मुनि उदितकुमारजी, डॉ. मुनि अभिजीतकुमारजी एवं साध्वी कुंदनरेखाजी के पावन सान्निध्य ने कार्यक्रम को आध्यात्मिक ऊँचाइयों से अनुप्राणित किया।

कार्यक्रम में भारत सरकार के राज्यमंत्री हर्ष मल्होत्रा मुख्य अतिथि, प्रख्यात उद्योगपति सावित्री जिंदल विशिष्ट अतिथि तथा जैन श्वेतांबर तेरापंथी महासभा के अध्यक्ष महेंद्र नाहटा विशेष अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। इसके अतिरिक्त अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल की अध्यक्ष सुमन नाहटा, आचार्य महाश्रमण प्रवास व्यवस्था समिति के अध्यक्ष कन्हैयालाल जैन पटावरी सहित अनेक गणमान्य व्यक्तित्वों ने अपनी उपस्थिति से समारोह की गरिमा बढ़ाई। इस अवसर पर जोधराज जी बैद ने आचार्य श्री महाश्रमण जी का संदेश पढ़कर सुनाया. दिल्ली सभा के सदस्यों ने डॉ.साध्वी कुंदन रेखा जी रचित भावपूर्ण गीत प्रस्तुत किया।

केंद्रीय मंत्री हर्ष मल्होत्रा ने कहा कि 'यह अवसर केवल एक स्मारक के उद्घाटन का नहीं, बल्कि एक दिव्य चेतना के पुनः प्रतिष्ठापन का क्षण है।' उन्होंने साध्वीप्रमुखा कनकप्रभाजी को 'वात्सल्य, करुणा और संवेदना की साक्षात् प्रतिमूर्ति' बताते हुए कहा कि वात्सल्य पीठ आने वाली पीढ़ियों के लिए एक जीवंत प्रेरणा केंद्र सिद्ध होगा।' मुनि विमल कुमार जी ने कहा कि 'वात्सल्य केवल भावना नहीं, बल्कि साधना की पराकाष्ठा है, जिसे शासन माता ने अपने जीवन में जिया।' मुनि उदितकुमार जी ने कहा कि 'उनका जीवन संयम और संतुलन का अद्भुत उदाहरण है, यह स्थल आत्मिक शांति का अनुभव कराएगा।'

डॉ. मुनिश्री अभिजीतकुमार एवं साध्वी कुंदनरेखा ने शासनमाता के प्रति समर्पित अपनी कविता और उद्गार व्यक्त किए। सावित्री जिंदल ने इसे अपने जीवन का सौभाग्यपूर्ण क्षण बताते हुए कहा कि 'वात्सल्य पीठ करुणा, ममता और साधना का जीवंत प्रतीक है।' उन्होंने साध्वीप्रमुखा को नारी शक्ति की प्रेरणास्रोत बताते हुए उनके जीवन को महिलाओं के लिए मार्गदर्शक बताया।

महासभा अध्यक्ष महेंद्र नाहटा ने कहा कि 'यह केवल वात्सल्य पीठ का उद्घाटन नहीं, बल्कि एक जीवंत आध्यात्मिक चेतना एवं उससे जुड़ी स्मृतियों का उत्सव है।' उन्होंने इसे 'करुणा और साधना का दिव्य तीर्थ' बताते हुए विश्वास जताया कि यह पीठ आने वाली पीढ़ियों को दिशा प्रदान करेगी। आचार्य महाश्रमण प्रवास व्यवस्था समिति के अध्यक्ष कन्हैयालाल जैन पटावरी ने कहा कि 'यह वात्सल्य पीठ शासनमाता के जीवन मूल्यों का साकार रूप है, जो समाज को सेवा, संयम और समर्पण की प्रेरणा देगा।'

उन्होंने युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण के दिल्ली के प्रति विशेष अनुकंपा का उल्लेख करते हुए कहा कि 'यह स्थल साधना और संस्कारों का ऐसा केंद्र बनेगा, जहाँ से नई पीढ़ी जीवन के सही मार्ग को पहचान सकेगी।' इस अवसर पर जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा दिल्ली के अध्यक्ष सुखराज सेठिया ने साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा के बहुआयामी व्यक्तित्व और उनकी साहित्यिक उपलब्धियों का उल्लेख करते हुए उन्हें 'तुलसी की अनुपम कृति' बताया। कार्यक्रम में वात्सल्य पीठ के समन्वयक श्री लक्ष्मीपत बोथरा ने निर्माण कार्य की विशेषताओं को रेखांकित किया, जबकि कार्यक्रम का कुशल संचालन महामंत्री श्री प्रमोद घोड़ावत ने किया। इस अवसर पर शासन माता साध्वी प्रमुखा कनक प्रभा जी के बहुआयामी व्यक्तित्व , कृतित्व पर और उनके जीवन दर्शन पर एक भव्य प्रदर्शनी ने सभी को प्रभावित किया।

शासन माता की संसार पक्षीय बहन निर्मला पुगलिया ने अपने उद्गार व्यक्त किये।विशेष अनुदानदाता विकास मालू की मातुश्री विजया देवी ने भी इस अवसर पर अपने भावपूर्ण उद्गार व्यक्त करते हुए इस पावन कार्य को एक आध्यात्मिक पुण्य बताया। समारोह में सभी वक्ताओं ने एक स्वर में कहा कि 'वात्सल्य पीठ' केवल एक स्मारक नहीं, बल्कि करुणा, साधना और आत्मिक उत्थान का जीवंत केंद्र बनेगा। यह स्थल आने वाले समय में श्रद्धा, प्रेरणा और आध्यात्मिक ऊर्जा का एक महत्वपूर्ण तीर्थ बनकर उभरेगा, ऐसी भावनाएं व्यक्त की।

योगक्षेम चित्रमय झलकियां

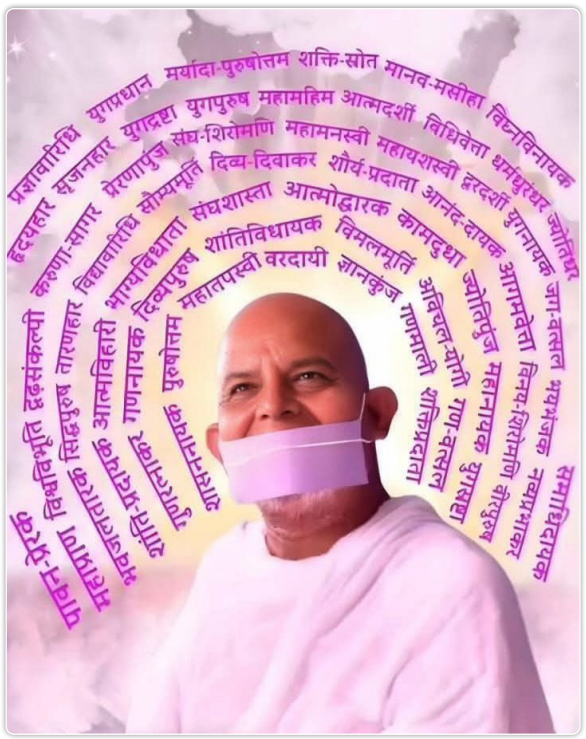

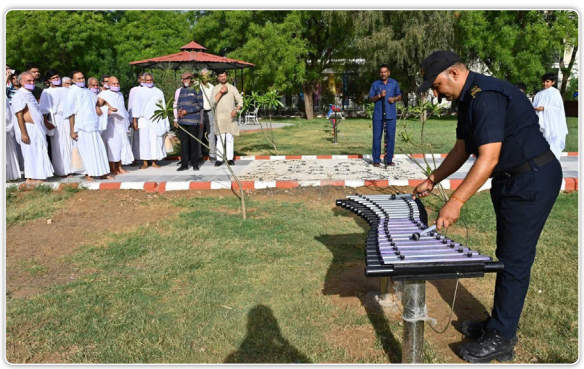

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के लिए मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक - पवन एच जैन द्वारा मै.आर.डी. प्रिंटर्स एण्ड पब्लिसर्स प्राइवेट लिमिटेड बी 48, सेक्टर 8, नोएडा, गौतमबुद्ध नगर, उत्तर प्रदेश - 201301 से मुद्रित तथा 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-110002 से प्रकाशित।